वर्ष 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 • अंक 5 • अगस्त 2022 • मूल्य : 20 रु.

जयपुर में पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. आदि का प्रवेश

सांचोर में चातुर्मास प्रवेश

सांचोर में चातुर्मास प्रवेश

चैन्नई में चातुर्मास प्रवेश

कुशल वाटिका बाड़मेर में शक्रस्तव अभिषेक

कुशल वाटिका बाड़मेर में शक्रस्तव अभिषेक

कुशल वाटिका बाड़मेर में शक्रस्तव अभिषेक

उदयपुर में नेमिनाथ कल्याणक महोत्सव

पाली में चातुर्मास प्रवेश

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

पूयणट्ठा जसोकामी माण-सम्माण कामए।
बहु पंसवई पावं मायासल्लं व कुव्वई।।

स्वपूजा का इच्छुक, यश का कामी और मान-सम्मान की कामना करने वाला मुनि बहुत सारे पाप उत्पन्न करता है और माया-शल्य का सेवन करता है।

A monk who is active to get himself worshippad by others, keen on fame and expects respectful treatment everywhere is in fact indulging is deceitful Karma and commits many sins.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	राबर्टसनपेट, के.जी.एफ. (दादावाड़ी)	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	कोप्पल (कर्णाटक)	06
4. छजलानी/घोडावत गोत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. अधूरा सपना	बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	09
6. तपश्चर्या	आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.	11
7. श्री जिनदत्तसूरिजी रचित साहित्य का परिचय	साध्वी स्मितप्रज्ञाश्रीजी म.	16
8. चातुर्मास सूचि	संकलित	17-24
9. समाचार दर्शन	संकलित	25-37
10. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 अंक : 5 5 अगस्त 2022 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष - उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : श्रीमती पुष्पा ए. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
मोबईल : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

विशेष दिवस

- 5 अगस्त श्री पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक, पू. श्री बुद्धिमुनिजी म. पुण्यतिथि पालीताना
- 11 अगस्त पाक्षिक प्रतिक्रमण, पू. गणाधीश श्री त्रैलोक्यसागरजी म. पुण्यतिथि लोहावट
- 12 अगस्त श्री मुनिसुव्रतस्वामी च्यवन कल्याणक
- 15 अगस्त अक्षयनिधि तप प्रारंभ
- 18 अगस्त श्री चन्द्रप्रभस्वामी मोक्ष कल्याणक, श्री शांतिनाथ च्यवन कल्याणक
- 19 अगस्त श्री सुपार्श्वनाथ च्यवन कल्याणक, पू. गणा. श्री हेमेन्द्रसागरजी म. पुण्यतिथि सूरत
- 20 अगस्त रोहिणी
- 23 अगस्त पर्युषण महापर्व प्रारंभ
- 26 अगस्त पाक्षिक प्रतिक्रमण, मणिधारी दादागुरु श्री जिनचन्द्रसूरिजी की 855वीं स्वर्ग जयन्ती महरौली नई दिल्ली
- 27 अगस्त पू. श्री देवचंद्रजी म. पुण्यतिथि अहमदाबाद
- 28 अगस्त श्री भगवान महावीर जन्म वांचन
- 29 अगस्त तेलाधर तपस्या प्रारंभ
- 31 अगस्त संवत्सरी महापर्व प्रतिक्रमण, मूल बारसा सूत्र वांचन (प्रथम प्रहर में)
- 4 अगस्त मणिधारी दादागुरु श्री जिनचंद्रसूरिजी म. की 881वीं जन्म जयंती, महरौली दिल्ली मेला
- 5 सितंबर श्री सुविधिनाथ मोक्ष कल्याणक

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

ऐसा जीवन मिलना मुश्किल है, जिसमें सदा-सदा एक जैसी स्थिति बनी रहती हो! जीवन धूप-छांव का मिला जुला प्रयोग है। जीवन सुख-दुख का घर है। जीवन अंधेरे और रोशनी का संगम है।

जिसने अपने जीवन में केवल और केवल सुख को ही भोगा है... दुख कभी देखा नहीं है। वह हकीकत में सुख का मूल्य नहीं समझ पाता।

सुख की समझ पाने के लिये दुख का आगमन अनिवार्य होता है।

जिस व्यक्ति ने कभी अंधेरा नहीं देखा हो, वह व्यक्ति प्रकाश का मूल्य नहीं समझ पाता।

दुख ही सुख का मूल्य समझाता है।

अंधेरा ही प्रकाश का महत्त्व बताता है।

समस्या यह है कि सुख भरे जीवन में जब अचानक दुख का आगमन होता है, तब वह इसे झेल नहीं पाता।

उसका मन अस्त व्यस्त हो जाता है। उसकी आन्तरिक बैचेनी हर क्रिया में झलकने लगती है।

समाधान यह है कि उस व्यक्ति को सुख में ज्यादा इतराना नहीं चाहिये। उसे मिला सुख उसके वर्तमान के पुरुषार्थ का परिणाम नहीं है।

उसे चिंतन करना चाहिये कि यह मेरे अतीत के पुरुषार्थ का परिणाम है, जो पुण्य के उदय के रूप में अवतरित हुआ है।

फिर मैं अहंकार क्यों करूँ!

जो व्यक्ति सुख में अहंकार नहीं करता, वह व्यक्ति दुख आने पर उदास नहीं होता। वह उसे भी उतनी ही सहजता से स्वीकार करता है, जितनी सरलता से उसने सुख को स्वीकार किया था।

वह कर्तृत्व भाव से मुक्त हो जाता है। मुझे सुख-दुख में नहीं उलझना है जो मेरे अतीत का परिणाम है। मुझे केवल अपने वर्तमान में सावधान रहना है, जो मेरे भविष्य का हेतु है।

यह चिंतन व्यक्ति को बाह्य अनुकूल या प्रतिकूल स्थितियों से मुक्त कर आंतरिक प्रसन्नता की अनुभूति कराता है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 35

राबर्टसनपेट, के.जी.एफ. (दादावाड़ी)

-मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
- साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

द्रविड देश कर्णाटके, है सोने की खान ।
केजीएफ महशूर यह, नाम नगर का जान ।।
चिंतामणी प्रभु पार्श्व का, है अनुपम दरबार ।
नीचे दादा देव की, प्रतिमा लघु आकार ।
तीन चरण पाषाण है, दत्त कुशल है एक ।
चारों दादा देव के, चरण सी में देख ।।
सुखकर शिवकर सौख्यकर, आधि व्याधि हर देव ।
क्षेमंकर है शांतिकर, श्री दादा गुरुदेव ।।

दादा गुरुदेव पंथ और सम्प्रदाय से परे हैं। उन्हें पंथभेद की संकीर्ण दीवारों में नहीं बांधा जा सकता। दादा गुरुदेव सूर्य और हवा के समान सार्वभौमिक और सार्वकालिक हैं, जिनके प्रकाश और शीतलता का अनुभव हर व्यक्ति करता है।

कर्नाटक प्रान्त में कोलार जिले में बसा 2 लाख की आबादी वाला नगर है- के.जी.एफ.। यहाँ पर जैन समाज के लगभग 150 परिवार हैं, जिसमें 15 घर खरतरगच्छ आम्नाय के हैं, परन्तु यहाँ का हर जैन दादा गुरुदेव में आस्था रखता है। वि.सं. 2009, माघ सुदि 12 दिनांक 26 जनवरी 1953 में आचार्य श्री लक्ष्मणसूरीश्वर जी के कर-कमलों से जिनमंदिर की प्रतिष्ठा भव्य अष्टदिवसीय समारोह के साथ सम्पन्न हुई थी। पूर्वमुखी जिनालय में मूलनायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान तथा आजू-बाजू पद्मप्रभु स्वामी व सुपार्श्वनाथ भगवान प्रतिष्ठित हैं।

मूलनायक के दाहिने अलग कक्ष में नाकोड़ा भैरव देव तथा बायें स्वतंत्र कक्ष में महावीर स्वामी, गौतम स्वामी, सुधर्मास्वामी आदि 7 चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं। गणधरों के पगलों से आगे चार सीढ़ियाँ चढ़कर छोटा कमरा है, जिसमें तीन शिलाखंड हैं। मध्य के एक ही शिलाखंड में जंगम युगप्रधान दादा श्री जिनदत्तसूरि तथा दादा श्री जिनकुशलसूरि के चरण-युगल प्रतिष्ठित हैं तथा आजू-बाजू के शिलाखंड में दो-दो जोड़ी चरण प्रतिष्ठित हैं, जिन पर रतनमुनि जी म., लब्धिमुनि जी म., श्री जिनचन्द्रसूरि जी म. व श्री मणिधारी जी म. के नाम खुदे हुए हैं। यह कक्ष पूर्णतया स्वतंत्र होने से दादावाड़ी का ही स्वरूप है। मुनि भगवंतों के चरणों की प्रतिष्ठा भी मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ ही सम्पन्न हुई है। दादा गुरुदेव के चरण सफेद मार्बल में निर्मित हैं, जिनकी लम्बाई 5 इंच है। आजू-बाजू के चरण मार्बल पाषाण में ही निर्मित हैं, जो हल्का नीलापन लिये हुए है।

यह जिनालय पूर्व में गृह मंदिर था, जिसका जीर्णोद्धार मुनि भगवंतों के सदुपदेश से हुआ तथा श्री संघ ने नूतन भव्य शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण करवाया। वर्तमान में इस जिन मंदिर का आमूलचूल जीर्णोद्धार कार्य

प्रारंभ है। दादावाडी में चारों दादा गुरुदेवों की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित की जायेगी। दादा गुरुदेव की प्रतिमाओं की अंजनशलाका पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के करकमलों से चेन्नई धर्मनाथ मंदिर की अंजनशलाका के साथ 26 अप्रेल 2015 को संपन्न हुई। साधु-साध्वी जी महाराज के लिये उपाश्रय चन्दन भवन के प्रथम मंज़िल पर है। मंदिर जी के समीप ही कुशल भवन नामक धर्मशाला यात्रियों के लिये हैं।

रोबर्टसनपेट नामक यह नगर अपनी विशेषताओं के लिये सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। कोलार गोल्ड फील्ड की 5 खानें यहाँ से केवल 5 कि.मी. दूरी पर स्थित हैं। दुनिया की सबसे गहरी, 1900 फीट गहरी खान भी यहीं पर है। कोटिलिंगेश्वर मंदिर यहाँ से 5 कि.मी., कृष्णगिरि तीर्थ 60 कि.मी. व देवनहल्ली तीर्थ 80 कि.मी. दूर है। इस मंदिर का प्रबंधन श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ करता है।

पता : श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर

चौथा ब्लॉक, राबर्टसनपेट, पोस्ट : कोलार गोल्ड फील्ड-563 122 (जि. कोलार) (कर्नाटक) दूरभाष : 08513-260251, 260524

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 36

उत्तरी कर्णाटक का कोप्पल जिला अपने आप में ऐतिहासिक समृद्धि से पूर्ण है। इस नगर का भव्य पौराणिक व धार्मिक इतिहास रहा है। जैनों की दक्षिण काशी के नाम से इतिहास में सुप्रसिद्ध इस नगर में एक समय ऐसा था, जब यहाँ 700 से अधिक जिन मंदिर थे। काल का प्रभाव, राजनैतिक उथल पुथल एवं धार्मिक असहिष्णुता का परिणाम यह रहा कि आज उन प्राचीन जिन मंदिरों में से केवल एक जिन मंदिर किल्ले में स्थित है।

कवि राजमार्ग ने इस नगर का महाकोप्पल के नाम से अपने काव्यों में वर्णन किया है। प्राचीन अनेक शिलालेखों में जैन मंदिरों व संस्कृति का वर्णन प्राप्त होता है। कन्नड के आदि कवि रत्न ने कोप्पल के उत्तुंग शिखरों की तुलना अत्तिमोब्बे के उत्कृष्ट चारित्र से की है। नगर के आसपास पहाडियों में अनेक गुफाऐं हैं, जिनमें दिगम्बर मुनि बडी संख्या में तप त्याग आराधना, संलेखना करते थे।

यहाँ पर स्थित गविसिद्धेश्वर मठ के पिछले हिस्से के पहाडों में सम्राट् अशोक के समय के शिलालेख नगर की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं।

यह नगर जैन, बौद्ध और शैव संस्कृति का केन्द्र रहा है। नगर के अनेक हिस्सों में जैन धर्म के उत्थान व विकास का इतिहास बिखरा पडा है। किले के धराशायी हिस्सों में तीर्थंकरों की प्रतिमाऐं व जिनमंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं।

वर्तमान में कोप्पल एक व्यापारिक, औद्योगिक व सांस्कृतिक नगर है। अनेक वर्षों तक मराठी पेश्वाओं, आदिलशाह अब्दाली, विजयनगर के सम्राटों, मैसूर राजघराना और हैदराबाद के निजाम का यहाँ शासन रहा है। सन् 1996 में जिल्ला मुख्यालय बनने के बाद इस शहर का तेजी से विकास हो रहा है।

इस नगर में 125 जैन परिवार बस रहे हैं। जो

राजस्थान, गुजरात, कच्छ आदि स्थानों से आये हैं। पिछले 60-70 वर्षों से साधु साध्वियों का आगमन निरन्तर हो रहा है। कई चातुर्मास भी यहाँ पर हो चुके हैं।

संघ की वर्षों की भावना थी कि यहाँ पर जिन मंदिर का निर्माण हो। इस बीच पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. वर्धमान तपाराधिका श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. का सन् 2006 मार्च 24 को पधारना हुआ। उनकी पावन प्रेरणा को प्राप्त कर ता. 8 अप्रेल 2006 को सकल श्री संघ ने एक होकर जिन मंदिर निर्माण का संकल्प लिया।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के पावन मार्गदर्शन के अनुसार मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा को बिराजमान करने का निर्णय किया गया। तदनुसार पार्श्वमणि तीर्थ की अंजनशलाका के समय पूज्यश्री के हाथों श्री मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा का बिम्ब भरा कर पूज्यश्री की निश्रा में ही ता. 24 मई 2006 को चल प्रतिष्ठा की गई।

ता. 28 जून 2007 को पूजनीया सुलोचनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में भूमिपूजन व खातमुहूर्त्त करवाया गया। ता. 7.7.07 को शिलान्यास संपन्न हुआ।

संघ की बहुत भावना थी कि पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के करकमलों से ही प्रतिष्ठा संपन्न हो। पर पूज्यश्री राजस्थान में विहार कर रहे थे।

शिखरबद्ध इस मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 21 मार्च 2011 को पूज्य आचार्य जिनोत्तमसूरिजी म. की निश्रा में संपन्न हुई।

मूल गर्भगृह के बाहर परमात्मा के दायीं ओर गौतमस्वामी की प्रतिमा बिराजमान है। बायीं ओर दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की भव्य प्रतिमा बिराजमान है। एक कलात्मक विशाल देवकुलिका में गुरुदेव की प्रतिष्ठा की गई है।

भक्त गण गुरुदेव के दर्शन पूजन कर अपने जीवन को धन्य बनाते हैं।

यहाँ महावीर गौशाला पिछले 65 वर्षों से जैन समाज की देखरेख में चल रही है। स्थानक भवन, महिला स्थानक भवन, तेरापंथ भवन यहाँ विद्यमान है। जिनमंदिर के पास ही भव्य उपाश्रय का निर्माण हुआ है।

पता :

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन श्वेताम्बर सकल संघ

जैन मंदिर गली, गौशाला रोड़, पो कोप्पल (कर्णाटक)

50 दिवस का नियम कार्ड जारी

जयपुर। जयपुर स्थित जवाहर नगर संघ ने पूज्य गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. के 50वें संयम वर्ष प्रवेश के उपलक्ष्य में 50 दिवसीय कार्यशैली के एक कार्ड का वितरण किया है। इस कार्ड का विमोचन मोहनबाड़ी में संघ अध्यक्ष तिलोकचंद गोलेछा, पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार पंसारी, चातुर्मास संयोजक फतेहसिंह बरडिया, महामंत्री नीतिन दुगड, शरद मेहता, दीपक जैन आदि ने किया। और कार्ड की प्रथम प्रति पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं साध्वीवृंद को भेंट की। इस कार्ड में 50 दिनों की जीवनचर्या का विवरण है। जैसे एक दिन में आपने क्या-क्या धर्म कार्य किए। मंदिर दर्शन, पूजा, तपस्या, जाप, स्वाध्याय आदि की जानकारी देनी होगी।

स्वाध्याय शिवीर संपन्न

जयपुर 23 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. सा. की निश्रा में मोहनबाड़ी में दो दिवसीय स्वाध्यायी धार्मिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। ये स्वाध्यायी देश के अलग-अलग शहरों और कस्बों और गांवों में जाकर पर्युषण पर्व की आराधना करवाएंगें। यह आयोजन केयुप केन्द्रीय समिति के तत्वावधान में हुआ।

गोत्र इतिहास
39

छजलाणी/घोडावत गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

राजस्थान के जावल नगर से इस गोत्र की उत्पत्ति हुई है। इस गोत्र की उत्पत्ति का संवत् प्राप्त नहीं होता है।

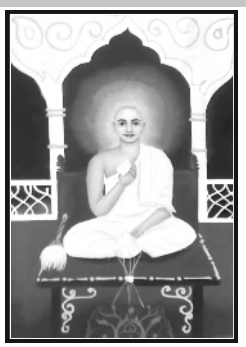

उन दिनों जावल नगर पर राजपूत राजा रावत वीरसिंह का शासन था। उसे निरपराध पशुओं के शिकार करने में आनंद की अनुभूति होती थी।

उस शहर में विहार करते खरतरगच्छ की रुद्रपल्ली शाखा के आचार्य श्री जयप्रभसूरि महाराज का अपने शिष्य मंडल के साथ पदार्पण हुआ। उनके प्रवचनों से राजा बहुत प्रभावित हुआ।

प्रतिदिन जिनवाणी के रसपान से राजा का हृदय परिवर्तित हो गया। आचार्यश्री ने निरपराध जीवों की हिंसा न करने का उपदेश दिया।

प्रभावित हुए राजा ने शिकार न करने का आजीवन संकल्प ग्रहण कर लिया। आचार्यश्री ने उनके सिर पर वासचूर्ण डाला और जैन धर्म में दीक्षित किया। राजा वीरसिंह सच्चा श्रावक बन गया।

नवरात्रि के दिनों में जब उनकी कुल देवी को बलि की उपलब्धि नहीं हुई तो उसने पूरे नगर में उत्पात मचा दिया। राजा गुरु महाराज की शरण में पहुँचा। उसने निवेदन किया- देवी के प्रकोप से हमें बचायें।

आचार्य गुरु महाराज ने देवी को प्रकट कर उपदेश दिया।

देवी ने बलि निषेध को स्वीकार कर लिया।

तब राजा ने विचार किया कि मेरे बाद कहीं पुनः देवी को बलि चढ़ना प्रारंभ न हो जाये, इस कारण अपने पुत्र छज्जुकुमार को बुलाया और देवी की प्रतिमा को जलशरण करने का आदेश दिया।

पुत्र ने पिता की आज्ञा का पालन किया। छज्जु के वंशज छजलाणी कहलाये। इनके वंशजों में शेरसिंह नामक पुत्र जो बाद में नागोर में बसा। उसे घोडों का बहुत शौक था, इस कारण उनके वंशज घोडावत कहलाये।

घोडावतों की ख्यात में इनकी उत्पत्ति गौड राजपूत रावत वीरसिंह से मानी जाती है। वीरसिंह के पुत्र छाजू के वंशज छजलाणी कहलाये। राजा वीरसिंह के दूसरे पुत्र वैरीसाल के वंशज गौड राजपूत होने से गोडावत कहलाने लगे। गोडावत का ही रूपान्तर घोडावत हुआ।

छज्जुकुमार आत्मार्थी साधक थे। उनके द्वारा रचा गया एक कवित्त बहुत प्रसिद्धि को प्राप्त है-

नंदन की नथ रही, वीसल की बीस रही।
रावण की सब रही, पीछे पछताओगे।
उततें न लाये आथ इतते न चले साथ।
इतहीं की जोरी तोरी इतहीं गमाओगे।
हेम वीर घोडा काडू के न चल साथी।
वाट के बटाऊ जैसे कल ही उठ जाओगे।
कहत हैं छजुकुमार सुण हो माया के यार।
बंधी मुठी आये हो, पसार हाथ जाओगे।।

प्रेरणा

हजार टुकड़े होने पर भी दर्पण अपनी प्रतिबिंब दिखाने की क्षमता को नहीं खोता। ऐसे ही किसी भी परिस्थिति में हमें अपने अंतर्निहित अच्छे स्वभाव को नहीं खोना चाहिए और न ही उसके प्रतिबिंब दिखाने की क्षमता को। आज से हम अपनी अच्छाई को कभी न खोयें...

धारावाहिक
कथा
21

अधूरा सपना

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

(गतांक से आगे)

वंकचूल ने अपने साथी को संकेत करके कहा- जाओ! पूछ कर बताओ! क्या हो रहा है! ये दोनों लोग तलवारबाजी तो ऐसे कर रहे हैं, जैसे एक दूसरे के खून के प्यासे हैं। परस्पर दोनों ही एक दूसरे को मारने के लिये लड़ रहे हैं। फिर भी लोग इन्हें जिस उल्लास से बधा रहे हैं, उसे देखकर यह भी नहीं लगता कि यह किसी व्यक्तिगत वैमनस्य का परिणाम है। पूछने पर ही सही अंदाज लग सकेगा।

साथी ने जाकर एक वृद्ध व्यक्ति से पूछा- भैया! मैं इस दृश्य के बारे में कुछ पूछना चाहता हूँ। यह कैसी लड़ाई है जिसमें आप सभी का उल्लासभरा उन्माद इन्हें और अधिक उत्साहित कर रहा है। इस स्थान का नाम भी क्या है?

उस वृद्ध व्यक्ति ने पलभर रुककर उस व्यक्ति के चेहरे को नापते हुए कहा- इस स्थान का नाम है सिंह गुफा! इतना बोल कर वह चुप हो गया और शीघ्र ही अपनी निगाहें लडाई की ओर लगा दी। जैसे वह यह कहना चाह रहा हो कि पूछो मत! मुझे देखने दो! मैं इस कार्यक्रम की एक झलक भी अनदेखी नहीं करना चाहता।

उस साथी ने फिर भी साहस न छोड़ा और पुनः उसका हाथ पकड़कर अत्यन्त विनम्रता से पूछा- आप मेरी जिज्ञासा को शान्त कीजिये। मुझे बताईये कि ये दो व्यक्ति क्यों लड़ रहे हैं? यह कैसी प्रतिस्पर्धा है जिसमें मौत का भी भय नहीं हैं। कितना खतरनाक और डरावना है यह युद्ध! देखकर ही रोंगटे खड़े हे रहे हैं।

उस वृद्ध ने वंकचूल के साथी को ऊपर से नीचे तक अच्छी तरह नापने के बाद बोला- लगता है तुम परदेशी हो। मुझे लगता है तुम जब तक इस जंग के कारण को समझ नहीं लोगे, तब तक तुम उद्विग्न ही रहोगे। चलो मैं बताये देता हूँ कि यह जंग कोई आपसी विवाद के कारण नहीं चल रही है। चूंकि हमारे पुराने सरदार की मृत्यु हो गई है। अतः नये सरदार का चुनाव करना है। हमारे गाँव की यह पुरानी परम्परा है कि जो सबसे बलवान् हो, जिसे कोई हरा नहीं सके। वही हमारा सरदार होगा। सरदार के चुनाव की यह लडाई चल रही है।

तब तक वंकचूल भी निकट आ गया था। वह भी बड़ी उत्सुकता से इन दोनों की बातों को सुन रहा था। उसने उस वृद्ध की बातें सुनकर प्रश्न किया- तो क्या इस लडाई में दो में से किसी एक का मरना जरूरी है?

वृद्ध ने कहा- मरना जरूरी नहीं है, पर मर जाय तो कोई परिजन आरोप नहीं लगाता। क्योंकि यह जंग छिड़ने से पूर्व ही स्पष्ट घोषणा हो जाती है कि युद्ध में सर पर कफन बांध कर ही आना है। दोनों योद्धाओं में से जब एक आहत होकर गिर पड़ता है तो उसे सात बार पुनः लड़ने हेतु ललकारा जाता है। अगर वह पुनः मुकाबले के लिये खड़ा नहीं होता तो जो विजेता होता है, वह समस्त दर्शकों को तीन बार पुकारता है कि अगर कोई अपने आपको शूरवीर और तेजस्वी योद्धा मानता है तो मुकाबला करें। जब उसके आमन्त्रण पर कोई नहीं आता तो उसे विजेता घोषित करते हुए सरदार के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।

वंकचूल ने फिर पूछा- इस प्रतियोगिता में मात्र आपके गाँव वाले ही भाग ले सकते हैं या बाहर के भी? उसने कहा- हमारा सरदार वही बन सकता है जिसकी भुजाओं में बल है। हमें गाँव से मतलब नहीं, शक्ति से मतलब है। हमारा यह गाँव चोर डकैतों का गाँव है। इस गाँव में लगभग 40 परिवार रहते हैं।

इन दोनों का वार्तालाप चल ही रहा था कि इतने में सामूहिक हर्षध्वनि की आवाज ने दोनों का ध्यान भंग किया। दोनों ने गर्दन घूमाकर देखा तो जंग खत्म हो चुकी थी। जनता चिल्ला रही थी- सागर जीत गया... सागर जीत गया! दूसरा आदमी घायल अवस्था में तड़फ रहा था। उसका एक हाथ कट गया था। खून का फव्वारा हाथ में से लगातार उछल रहा था। फिर भी सभी का ध्यान विजेता सागर की तरफ था।

वह सागर चिल्लाया- क्या कोई ऐसा शख्स है जो मेरे साथ युद्ध करने का साहस कर सकता हो।

वंकचूल मन ही मन सोचने लगा- हम लम्बे समय से जंगल में भटक रहे हैं। महिलाओं के साथ आखिर मैं कब तक बिना लक्ष्य के भटकूंगा? इसकी अपेक्षा यह सुन्दर अवसर भाग्य से प्राप्त हुआ है। चोर जरूर हैं पर अपनों के प्रति निष्ठावान और बहादुर लगते हैं। मुझे प्राप्त अवसर का लाभ उठा लेना चाहिये।

भीड़ में से संचालक की आवाज गूंजी! मैं तीन बार युद्ध के लिये आमंत्रित करूंगा। अगर किसी ने चुनौती स्वीकार नहीं की तो सागर को विजेता घोषित करके इन्हें सरदार के रूप में नियुक्त कर दिया जायेगा।

सागर ने पुन: गर्जना की- है कोई माई का लाल जो मेरे साथ लड़ने के लिये उत्सुक हो?

वंकचूल ने गम्भीर आवाज में चुनौती स्वीकार करते हुए कहा- हाँ! मैं तुम्हारी चुनौती स्वीकार करता हूँ।

सभी का ध्यान वंकचूल की तरफ केन्द्रित हुआ। सभी उसी को देखने लगे। आखिर वो राजबीज था। सौन्दर्य और शौर्य दोनों ही जैसे उसकी अमानत थी। सभी उसका उत्तर सुनकर प्रभावित हुए। सागर ने खूंखार आँखों से उसे ऐसे घूरा जैसे उसका वश चले तो पूरा ही निगल जाय।

संचालक ने तुरन्त घोषणा करते हुए कहा- अब ''कौन बनेगा सरदार'' का निर्णय इसी स्थान पर ठीक सूर्योदय होते ही होगा। आज कार्यक्रम समापन की घोषणा की जाती है। कल सुबह ठीक समय पर जनता के बीच सागर एवं इस परदेशी का युद्ध होगा और जो भी विजेता होगा, उसे सरदार घोषित किया जायेगा।

सागर को अपनी प्रचंड शक्ति पर अभिमान था। वंकचूल तेजस्वी था पर काया की अपेक्षा सामान्य था, अत: सागर को लगा इसे तो वह चुटकियों में मसल देगा!

जनता धीरे-धीरे अपने-अपने आशियाने की ओर मुड़ गयी। सामान्य अतिथि धर्म दिखाते हुए प्रमुख व्यवस्थापक ने वंकचूल और उसके पूरे काफिले के लिये दो सामान्य सुविधायुक्त झोपड़ियां रुकने हेतु दिखा दी। खाने पीने की गर्म भोजन सामग्री भी वंकचूल को उसने मना करने पर भी परोस दी।

वंकचूल इस सामान्य शिष्टाचार से प्रभावित हुआ। उसने सोचा, युद्ध का निर्णय लेकर उसने परिवार एवं साथियों के साथ न्याय ही किया है।

वंकचूल का पूरा काफिला एकत्र था। खा-पीकर सभी जब निवृत्त हो गये तो सुन्दरी ने कहा- भैया! आपने यह कैसा अतिरिक्त साहस किया है। उस सांडनुमा व्यक्ति से लड़ना यानि मौत को सामने से निमन्त्रण देना है। आप जितने निर्भय हैं, हम उतने ही भयाक्रांत है। आपको दीर्घ विचार करने की आवश्यकता थी। यहाँ अपरिचितों के बीच आपने सभी को सांसत में डाल दिया हैं। किसी साफ सुथरे शहर में जाकर हम सभी सामान्य जीवन जीने की चेष्टा करते तो ज्यादा बेहतर था। पत्नी भी पास ही थी। उसने भी भर्रायी आवाज में नणंद का समर्थन करते हुए कहा- यह नयी आपदा आपने क्यों मोल ली!

वंकचूल ने देखा- नणंद भाभी दोनों ही भयभीत है। उनकी आँखों में जमानेभर का दर्द सिमट आया है। जब राजमहल छोड़ा, तब दोनों के मन निर्भय थे पर अब जैसे इन्हें मौत मेरे माथे पर घूमती नजर आ रही है। इन्हें आश्वस्त करना मेरी नैतिक जिम्मेदारी है। अन्यथा ये पूरी रात घबराहट के मारे सो नहीं पायेगी।

वंकचूल ने हँसते हुए कहा- तुमने सागर की बलिष्ठ काया देखकर शायद इतनी नकारात्मक सोच बनायी है। लड़ाई बल से नहीं बुद्धि से लड़ी जाय तो विजय का ताज कोई मुश्किल नहीं है।

(क्रमश:)

णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

तपश्चर्या

आचार्यश्री जिनहरिसागरसूरिजी म.

(तपस्वियों से दो बातें= चतुर्विध संघ द्वारा मंगलकारी तपस्या की जाती है। पर क्यों करनी चाहिये? तपस्वी की भावना कैसी होनी चाहिये? इस का जवाब आप जानना चाहते हैं तो कृपया इस आलेख को आदि से अन्त तक मनन पूर्वक पढ़ें।)

आत्मा का लक्षण बताते हुए ज्ञानी महापुरुषों ने फरमाया है कि- ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, शक्ति और उपयोग, ये जीव के लक्षण हैं। जहाँ ये गुण कम से कम मात्रा में भी पाये जाये उसको जीव-आत्मा जानों[1]।

दो प्रकार की सृष्टि देखने में आती है। सजीव सृष्टि और निर्जीव सृष्टि [2]पृथ्वी, पानी, आग, वायु और वनस्पति यह सजीव स्थावर सृष्टि है। लट, चिंटी, मक्खी, मछली, गाय, कबूतर, सांप, नोलिया, मनुष्य आदि दो इन्द्रियों से पंचेन्द्रिय तक सजीव जंगम-त्रस या चलती फिरती सृष्टि है। [3]वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श लक्षण वाले अजीव पुद्गलों से बने हुए हाट हवेली, रसोड़ा, कपड़े, चूला, चक्की, बरतन, शब्द, अन्धकार, उद्योत, प्रभा, छाया, धूप आदि रूपी अजीव सृष्टि है। जड़-चेतन की [4]गति में सहायता देने का लक्षण वाला धर्मास्ति काय। जड़-चेतन की स्थिति में सहायता देने वाला अधर्मास्ति काय। जड़-चेतन द्रव्यों को अवकाश-स्थान देने वाले आकाशास्ति काय। नये को पुराना और पुराने को नया बनाने वाला काल। ये अरूपी अजीव-सृष्टि हैं।

सजीव सृष्टि संसार में अनादि काल से अपनी उलटी प्रवृत्ति के कारण कुवासनाओं से घिरी हुई मिथ्यात्व में, अविरति में, क्रोधादि कषायों में और मन वचन काया की दुष्प्रवृत्ति रूप योगों में अपनी ताकत को लगा रही है। उलटे रास्ते पर चलने वाला कभी अपने निश्चित लक्ष्य तक नहीं जाता। इसी तरह जीव जन्म से, जरा से, व्याधियों से, मृत्यु से, दु:खों से छूटना चाहता है पर वह छूटता नहीं।

कर्त्ता-कारण-कार्य जब तक एक रूप नहीं होते तब तक सिद्धि नहीं होती। जब तीनों एक रूप हो जाते हैं तो सिद्धि स्वयं अनुचरी बन जाती है। इस सिद्धि को चाहने वाली आत्माओं को शुद्ध देव के स्वरूप दर्शन में और शुद्धाचारी सुविहित सद्गुरु की सत्संगति में अपने मन-वचन और काया के योगों को जोड़ने का प्रयत्न करना चाहिये।

सद्गुरु-संगति करने वाली आत्माओं की, जहाँ हमारी बुद्धि नहीं पहुँचती ऐसी-ऐसी अपूर्व बातें सुनने को मिलती हैं। प्रवचन श्रवण से अपूर्व ज्ञान होता है। अपूर्व ज्ञान से तीन लोक की प्रत्यक्ष और परोक्ष बातें विशिष्टतया जानने को मिलती हैं। उस अपूर्व विज्ञान से साधना के मार्ग में अहितकारी प्रवृत्तियों का प्रत्याख्यान-त्याग करने की भावना जागृत होती है। प्रत्याख्यान से जीवन संयमी होता है। संयमी जीवन में आश्रव-संसारवर्द्धक कर्मों में अनासक्ति पैदा होती है। अनासक्ति से पूर्व कर्मों को तपाने वाले तप गुण की अभिवृद्धि होती है। तपगुण से कर्मों का व्युदान-नाश होता है। कर्मों के नाश से सपाप-योगों में अक्रियता होती है। इसी प्रकार क्रमश: अक्रियता से शाश्वत-अविनाशी अनंत सुख की सिद्धि[5] प्राप्त होती है।

सत्संगी-सम्यक्त्वी मिथ्यात्व को मिटाता हुआ, वीतराग केवलज्ञानी अंतरंग दुश्मनों को जीतने वाले अरिहंतों को अपना इष्ट देव, पंचमहाव्रतधारी कंचन कामिनी के त्यागी शुद्ध प्ररूपक शुद्धाचारी साधुओं को अपना गुरु एवं वीतराग-सर्वज्ञ भगवान् द्वारा फरमाये हुए तत्त्वों को अपना धर्म मानने की प्रतिज्ञा करता है।[6] इन तीनों सुदेव-सुगुरु और सुधर्म की आराधना से अपनी आत्मा को अपनाता है।

'अपनी-आत्मा' इस वाक्य से यह भाव टपकता है कि आप खुद और आत्मा ये दो चीजें होंगी, पर ऐसा नहीं है।

खुद आत्मा ही धन, धान्य, क्षेत्र, हाट, हवेली, सोना, चाँदी, मोटर, गाड़ी आदि परिग्रह के संग्रह में लगा हुआ इन चीजों में अहंता-ममता पोष रहा है। ज्ञानी के सत्संग में आने से इन वस्तुओं से अहंता, ममता, आत्मीयता अपनापन मिटाकर अपने में ही अपनापन देखता है उस समय आत्मा ही आत्मा को अपनी कहता है।

मिट्टी में सोना, तिल में तेल, दूध में घी, फूल में खुशबू जैसे व्याप्त हो रही है। वैसे ही आत्मा अपने शरीर में व्याप्त हो रही है। शरीर और आत्मा अलग-अलग हैं। प्रयत्न करने से मिट्टी से सोना, तिल से तेल, दूध से घी, फूल से इत्र निकाला जाता है उसी प्रकार प्रयत्न के द्वारा ही शरीर से आत्मा जुदा किया जा सकता है।

परलोकगामी आत्मा शरीर से जुदा होता ही है। इसमें प्रयत्न की क्या आवश्यकता है? ऐसा प्रश्न आत्मा के स्वरूप को न जानने से ही होता है। मरने पर स्थूल औदारिक शरीर छूटता है। कार्मण और तैजस् ये दो सूक्ष्म शरीर हर हालत में बने रहते हैं।

औदारिक शरीर हाड, मांस आदि सात धातुओं का पशुओं का और मनुष्यों का होता है। वैक्रिय शरीर देवता, नारकी और लब्धिधारी मनुष्यों के होता है। आहारक शरीर चौदह पूर्वधारी लब्धि संपन्न साधुओं के होता है। तैजस् शरीर ऊपर कहे तीन शरीरों के योग्य पुद्गलों को पचाता है, और [7]कार्मण शरीर कर्मवर्गणा को ग्रहण करता है। भव में और भवान्तर में तैजस्-कार्मण शरीर आत्मा के साथ ही सूक्ष्मातिसूक्ष्म[8] रूप से रहते हैं।

तैजस् और कार्मण शरीर से सम्बन्धी जीव मिथ्यात्व अविरति, कषाय, योग आदि कारणों में से कोई भी कारण से प्रेरित हो कर्मों को ग्रहण करता है। यहाँ प्रश्न होगा कि कर्मों का ग्रहण कैसे होता है? कर्म तो किये जाते हैं। कर्म क्या कोई वस्तु है जो ग्रहण की जाती है? इसके जवाब में यह जानना चाहिए कि 'कर्म किया जाता है'-यह बात तो छोटा बच्चा भी जानता है। पर कर्म करने से कर्म संज्ञा वाले पुद्गलों का बन्ध होता है यह बात ज्ञानी लोग ही जानते हैं।

कर्म पुद्गलों का बंध किस आकार प्रकार का होता है? इसके सूक्ष्म स्वरूप को जानने के लिए कर्म विपाक आदि ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। मोटे रूप में हमारा जो स्थूलरूप स्त्रीत्व, पुरुषत्व, पशुत्व, रोगीत्व, निरोगत्व, पंडितत्व, मूर्खत्व आदि दिखता है उसके कई कारणों में कर्म भी एक कारण है।

कई कारण कहने का मतलब यह है कि हमारा दृश्यमान स्थूल रूप 1-काल 2-स्वभाव 3-नियति 4-पूर्वकृत कर्म और 5-पुरुषार्थ से बना है। भूतकाल के पुरुषार्थ को ज्ञानी लोग पूर्वकृत कर्म कहते हैं। दूर के भविष्य में होने वाले पुरुषार्थ को ज्ञानी लोग नियति या भावीभाव नाम देते हैं। वर्तमान काल की क्रिया को पुरुषार्थ कहते ही हैं। काल-पल, विपल, घड़ी, घण्टा, दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी आदि नामों से या भूत-भविष्य, वर्तमान की संज्ञा से प्रसिद्ध है ही। स्वभाव प्रकृति को कहते हैं। प्रत्येक कार्य की सिद्धि में मोटे रूप से ये पाँच कारण होते हैं।

पांच कारण अनुकूल हो तो अनुकूल कार्य बन जाता है। प्रतिकूल हों तो प्रतिकूल कार्य बन जाता है। या यों कहिये बना हुआ काम बिगड़ जाता है। अच्छे या बुरे कर्मों का बंधना, अच्छे या बुरे कर्मों के फलों का मिलना, कर्मों से छुटकारा पाना इत्यादि सारा कार्यक्रम उन ऊपर बताये कारणों से प्रेरित आत्मा द्वारा होता जाता है।

इस प्रकार का कारणवाद मनुष्यों को क्या आलसी-निरुद्यमी-हतोत्साह नहीं बनाता? मनुष्य क्या यह नहीं समझ लेगा कि मेरा किया कुछ नहीं होगा। वैसे कारण मिलेंगे तब कार्य हो जायगा, मुझे कुछ नहीं करना चाहिए, यह दलील पांच कारणों को बिना समझे की जा रही है। पांच कारणों में तीन कारण तो मनुष्य के कहो या जीव के पुरुषार्थ में ही रहे हुए हैं। भावि-पुरुषार्थ-नियति, भूत-पुरुषार्थ-कर्म, वर्तमान पुरुषार्थ-पुरुषार्थ। पुरुषार्थ से ही काल स्वभाव में भी विकास किया जाता है। इस हालत में निरुद्यमी आलसी होने की गुंजाइश ही कहां रहेगी? कर्त्ता को कार्य सिद्धि में कारणों का ख्याल तो रखना ही होगा। कर्त्ता आत्मा अपने पुरुषार्थ से प्रतिकूल कारणों को अनुकूल बना सकता है, एवं पूर्व में बताये हुए अपने लक्षणों को, गुणों को विकसित-पूर्ण विकसित करके परमपद को पा जाता है- परमात्मा हो जाता है।

आत्मा-परमात्मा हो जाता है, यह तो बड़ी अपूर्व बात है! क्या हम परमात्मा की बराबरी कर सकते हैं? कर सकते हैं। जरूर कर सकते हैं, हमने उस ढंग का पुरुषार्थ किया नहीं। कुसंगति में फंसे रहे। इसलिये हमारा जीवन गुलाम, वासनाओं का दास, पराधीन बना हुआ है। अत: आत्मा ही परमात्मा हो जाता है यह बात हमें अपूर्व प्रतीत होती है।

परमात्म पद की साधना कर्मों के निमित्त से होने वाले विकारी भावों को तत्परता से मिटा देने पर होती है। उसके लिये इच्छाओं पर रोक लगानी चाहिए। इच्छाओं को रोकने से तपश्चर्या होती है। [9]तपश्चर्या से ज्योति स्थान आत्मा में ज्योति प्रकटती है। ज्योति स्वरूप आत्मा अखंड ज्ञान और आनन्द की मूर्ति बन जाती है।

ज्योति स्वरूप होने से ही तप को आत्मा का स्वाभाविक गुण शास्त्रों में माना है। संसार में चक्कर लगाने वाले, पुद्गलों से प्यार करने वाले तपश्चर्या के नाम से ही घबरा जाते हैं। यों भले ही शास्त्रों में असंगतियां बताते रहें पर तपश्चर्या के विरोध में पूछ ही बैठते हैं कि तपश्चर्या करना किस शास्त्र में लिखा है? उस समय शास्त्र को आधार बना लेते हैं। शास्त्रों में साधुओं के चरित्रों में अनेक तपोमय साधनाएं आती हैं उनको और श्रावकों के चरित्रों में-अहापरिग्गहिएहिं तवो कम्मेहिं-भावे माणा विहरंति-अर्थात् यथा गृहीत् तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे-इस भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पांचवे उद्देशे में-तुंगिया नगरी के श्रावकों की तपो-विशेषताओं के पाठ को गजनिमीलिका-(उपेक्षा दृष्टि) से देखते हैं। ऐसे भ्रांत विचारों से दूर रहते हुए, भव्यात्माओं को आत्मा के तप-गुण को विशेषतया विकसित करना चाहिए।

तपश्चर्या करने वालों को [10]ऐहिक-इस लोक सम्बन्धी सुखों के लिये तप नहीं करना चाहिए। पारलौकिक-परलोक में इन्द्र, चक्रवर्ती, वासुदेव, राजा, महाराजा आदि पद-सुख-भोगों की कामना से तपस्या नहीं करनी चाहिए। यश, कीर्ति, प्रसिद्धि के लिये भी तपस्या नहीं करनी चाहिए। केवल कर्म क्लेशों को खपाने के लिये-निर्जरा के लिये तपस्या करनी चाहिये। यह आदर्श मार्ग है।

तप का अजीर्ण क्रोध होता है। क्रोध से असमाधि होती है। असमाधि से पाप कर्मों का बन्ध होता है। पाप कर्मों के बन्ध से जीवात्मा की दुर्गति होती है। इसलिये तपस्या करते हुए तपस्वी को सावधानी रखनी चाहिए। किसी भी हालत में-अपने विरोधी के लिये भी क्रोध न करे। क्रोध के अंधड़ (आँधी) में तप ज्योति बुझ जाती है और जीवन अंधकारमय बन जाता है। भवभीरु भव्यात्माओं को तपस्या करते हुए क्षमा-गुण का विशेषतया ध्यान रखना चाहिए। क्षमा के साथ तपस्या करने वाला[11] निर्जरार्थी हो उदासीन भाव से तप:समाधि में लीन होकर तपश्चर्या से अपने पुराने-पूर्व जन्मान्तरों में संचित पाप कर्मों को मिटा देता है।

आहार का त्याग कर देने मात्र से तप नहीं हो जाता। दुष्काल में-अन्नाभाव होने से यों ही आहार में कमी होती है। कहीं-कहीं आहार न मिलने से लाखों आदमी भी मर जाते हैं। उनका मरना तपस्वी मरना नहीं है। उसे शास्त्रकारों ने बाल मरण कहा है। इसलिये[12] आहार त्याग के साथ क्रोध-मान-माया लोभ रूप कषायों का त्याग होना चाहिए। वर्ण-गंध-रस-स्पर्श-शब्द रूप पांचों इन्द्रियों के विषय भोगों का त्याग होना चाहिए। उसी हालत में किया हुआ उपवास, उपवास, माना जाता है। लड़ झगड़ के किसी संसारी स्वार्थ से प्रेरित हो किया हुआ आहार-त्याग उपवास नहीं वह तो केवल लंघन रूप ही माना जायेगा।

संसारी स्वार्थ उपवास-तेला-अट्ठाई करूँगा तो ससुराल से, कुटुम्बियों से रुपये मिलेंगे। मेरी कीर्ति होगी। मुझे लोग वेश आदि देकर सन्मानित करेंगे। वरघोड़े जलूस निकलेंगे। मेरे लिये गीत गाये जायेंगे। मेहन्दी लगेगी। वाह रे हम? यह कहने को मौका मिलेगा। लोग तपसीजी-तपसीजी कहकर पुकारेंगे इत्यादि वासनाओं से की हुई तपस्या, तपस्या नहीं होती बल्कि एक प्रकार की आत्म वंचना-विडंबना मात्र होती हैं जबकि कुटुम्बियों से मनचाहे रुपये नहीं मिलते। मनचाहे वरघोड़े नहीं निकलते। मनचाहे जीमण नहीं होते तब तपस्या करने वाला खुद ही कहने लगता है 'हाय मैंने तो कुत्तों की सी भूख काढ़ी' ये भाव तपस्या को विडंबना का रूप दे देते हैं।

उपवास का अर्थ शास्त्रकारों ने बताया है कि

उप-आत्मनः समीपे वासः निवसनं-उपवासः- अर्थात् - आहार त्याग-कषाय त्याग और विषयों का त्याग करके गुरुजनों के सत्संग से आत्मा के नजदीक रहने को उपवास कहते हैं। उपवासी तपस्वी को प्रतिक्षण आत्मा का और परमात्मा का ध्यान रहना चाहिए। निंदा-विकथा से दूर रहते हुए आत्मचिन्तन में लगे रहना चाहिए। तपश्चर्या एक रसायन है। इसके साथ क्रोधादिक बदपरहेजियां करना सख्त मना है। रसायन से बुड्ढे जवान हो जाते हैं पर बदपरहेजियां से कोढी बन जाते हैं। इसी प्रकार तपस्या रूप रसायन के लिये भी जानना चाहिए।

चातुर्मास के दिन तपश्चर्या के लिये विशेषतया उपयोगी माने जाते हैं। यों ही जठराग्नि मंद होती है। अनाप-सनाप खाते रहने से बीमारियां आ घेरती है। बीमारियों से बचने के लिये यथाशक्ति तपश्चर्या जरूर करनी चाहिये। जिससे बदन निरोग रहे। खाना-पीना-जाना आदि की उपाधियां कम हों। चातुर्मास में रहे हुए साधु-संतों के सत्संग में तपस्वी जीवन से धर्मध्यान का अधिक लाभ प्राप्त होता है।

तपश्चर्या की प्रभावना प्रभु की भक्ति से, सद्गुरुओं की सेवा से, साधर्मी वात्सल्य से करनी चाहिए। तन-मन-धन की शक्ति को न छिपाते हुए यथाशक्ति तपस्या के पूर्ण होने पर उद्यापन करना चाहिये। उद्यापन में ज्ञानोपकरण पुस्तक-पाठशाला छात्रवृत्ति आदि ज्ञान-साधन और ज्ञानी की भक्ति करनी चाहिए। दर्शनोपकरण में श्रद्धा बढ़ाने वाले मंदिर, मूर्त्ति, तीर्थों की पूजा का प्रबन्ध, पूजा के साधन आदि से अपनी पराई श्रद्धा को मजबूत बनानी चाहिये। चारित्रोपकरण रजोहरण - चरवले - मुंहपत्ती - वस्त्र - पात्रादि तैयार करके चारित्र की भावना के साथ चारित्री-देशचारित्री साधु-श्रावकों की सेवा करनी चाहिए।

तपस्वियों की सेवा भव्यात्माओं को तपस्या के पहिले उत्तर पारणा कराकर तपस्या में अंगमर्दनादि तपस्वी के अनुकूल शुश्रुषा करके, तपस्या के अन्त में पारणा आदि की सेवा करनी चाहिये। करना, कराना और अनुमोदना करके तपस्या का लाभ लेना चाहिये। तपस्वी खुद अपनी तरफ से दूसरों की सेवा न चाहे परन्तु दूसरों को चाहिये कि वे तन-मन-धन से तपस्वियों की सेवा करें। तपस्वियों की सेवा करने से भी तीर्थंकर नाम गोत्र की प्राप्ति होती है।

समाज में तपस्या के खिलाफ कुछ लोग दलीलें देते हैं कि-

(1) तपस्या से कमजोरी पैदा होती है पर यदि अस्पतालों में जाकर देखा जाय तो खाने वाले ही बीमार-कमजोर दिखाई देंगे।

(2) तपस्या की धूमधाम में व्यर्थ का धन-व्यय होता है। नाच-गाना-तमाशों में, सिनेमा-बरातों में, गोठों में जितना खर्च होता है। उसका शतांश भी तपस्या के समारोहों में खर्च नहीं होता।

(3)-तपस्या से संतति कमजोर होती हैं बाल विवाह, बेजोड़ विवाह, बहुसंतति पैदा करना आदि कारणों से संतति कमजोर होती है पर तपस्या से संतति कमजोर होने की दलील लचर है। तपस्या से ब्रह्मचर्य की वृद्धि होती है।

(4)-तपस्या से क्रोध पैदा होता है। यह दलील अज्ञानी आदमियों के प्रति ही लागू हो सकती है। ज्ञानी, सत्संगी, आत्मार्थी, भवभीरु तपस्या में क्रोध नहीं करते, और अदालतों में जाकर देखेंगे तो एक भी तपस्वी के क्रोध का मामला मुकद्दमा नहीं दिखेगा। वहां तो असंयमी और तपस्या न करने वाले ही क्रोध में धमधमाते दिखेंगे। तपस्या के खिलाफ आन्दोलन मचाने वाले जनता में तपस्या के गुणों का प्रचार करें तो उनकी आत्मा का कल्याण हो सकता है। किसी भी वस्तु में ऐब दिखाते रहने से कोई कार्य-सिद्धि नहीं होती।

तपस्या करने वाले सावधान रहे। निकम्मी दलीलों को देने वाले बहुत पैदा हो रहे हैं। तिल का ताड़ करना इन्हें आता है। आप लोगों से तपस्या में होने वाली जरा सी भी गड़बड़ी उन्मार्ग को मजबूत बनाने वाली होगी। अतः आप लोग शांति क्षमा और विवेक के साथ यथाशक्ति तप करना, तपस्या में कषायों को जीतना, किसी प्रकार की स्वार्थीवासना के चक्कर में न पड़ना, यश-कीर्ति की इच्छा न करना, विषयों की अभिलाषा को मिटा देना, तपस्या के आदि मध्य और अंत में उत्तर पारण, पारण आदि का खूब खयाल रखना,

कुटुम्बियों द्वारा तपस्या के उपलक्ष्य में लेन-देन की जो रीतियां हैं, उनमें औचित्य का खयाल रखना, लड़ने झगड़ने और हताश होने की कल्पना भी न करना। अहिंसा संयम पूर्वक तपस्या करने वाले धर्मात्माओं को देवता भी नमस्कार करते हैं। कर्म संस्कारों को शुद्ध बनाने से ही आपका एवं आपके साथियों का कल्याण होगा।

मंगलकारी तपस्या

छः बाह्य और छः आभ्यंतर भेद से बारह प्रकार की होती है।

(1)-[13]अनशन- उपवासादि,

(2)-ऊणोदरिका- दो चार ग्रास कम खाना,

(3)-वृत्ति संक्षेप- खाने की चीजों का संक्षेप करना,

(4)-रसत्याग- दूध-दही-घी-तैल और मिष्टान्न आदि का त्याग करना,

(5)-काय क्लेश-ठंडी गर्मी को सहन करना,

(6)-संलीनता- इन्द्रिय दमन करना।

इन छः प्रकार के बाह्य तपों को करते हुए

(1)-[14]प्रायश्चित्- किये हुए पापों की आलोचना करनी

(2)-विनय- गुरुजनों का विनय करना

(3)-वेयावच्च- सेवा के अधिकारी गुरु, ग्लान, तपस्वी आदि की सेवा करना

(4)-सज्झाय- (स्वाध्याय) गुरु गम पूर्वक पठन पाठन करना

(5)-ध्यान- आर्त्तध्यान और रौद्र ध्यान का त्याग कर धर्म-ध्यान और शुक्ल ध्यान करना

(6)-कायोत्सर्ग- कर्म क्षय के लिये काय चिंता को छोड़ कर आत्म चिंतन करना। इस प्रकार इन छः आभ्यन्तर तप के भेदों का अनुशीलन करना चाहिये, जिससे जीवन मंगलमय बन जाता है।

उपसंहार शारीरिक-वाचिक-और मानसिक शुद्धि के साथ देव, गुरु और धर्म पर परमश्रद्धा को रखते हुए केवल आत्मशुद्धि के लिये, निर्जरा के लिये तपश्चर्या करनी चाहिये। इस लोक और परलोक सम्बन्धी किसी फल की चाहना भी नहीं रखनी चाहिये। सत्कार-मान पूजा के लिये दम्भ के साथ जो तप किया जाता है एवं मूढ़ता के साथ अपने मन वचन काया को संकट में डालकर दूसरों का अनिष्ट करने के लिये जो तप किया जाता है शास्त्रकार उसका आदर नहीं करते। विद्वानों ने 'तपःसीमा मुक्तिः'-अर्थात् तप की सीमा मुक्ति बताई है। अतः मोक्ष के लिये तप करना चाहिये। 'तपोऽधीना ही संपदः' तपस्या के अधीन सारी सम्पत्तियां रहती हैं। भव्यात्मा तपस्या में यथाशक्ति प्रयत्न करें, और कल्याण के भागी बने।

।। ॐ णमो तवस्सीणं ।।

फुटनोट-

1. नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
   वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं।।
   (उत्तरा. अ. 28 गा. 11)
2. 'तस थावरा य संसारी' (जीवविचार गा. 2)
3. सद्दंधयार उज्जोओ, पहा छायाऽऽतवेइ वा।
   वण्ण रस गंध फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं।।
   (उत्तरा. अ. 28 गा. 12)
4. गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो।
   भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं।।
   वत्तणा लक्खणो कालो... (उत्तरा. अ. 28 गा. 9-10)
5. सवणे नाणे विन्नाणे पच्चक्खाणे य संजमे।
   अणाहए तवे चेव वोदाणे, अकिरिया सिद्धि।।
   (भगवती सूत्र शत. 2 उद्दे. 5)
6. अरिहंतो महदेवो जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो।
   जिणपन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं।। (आवश्यकसूत्र)
7. औदारिक वैक्रियाऽऽहारक-तैजस्-कार्मणानि शरीराणि।
   (तत्त्वार्थ सूत्र-2-37)
8. तेषां-परं परं सूक्ष्मम्।। (तत्त्वार्थ सूत्र-2-38)
9. तवो जोइ जीवो जोइठाणं। (उत्तरा. अ. 12. गा. 44)
10. नो इहलोगट्ठयाए तव महिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए तव हिट्ठेज्जा, नो कित्ति-वण्ण-सद्द सिलोगट्ठयाए तव महिट्ठिज्जा, नन्नत्थ-निज्जरट्ठयाए तव महिट्ठिज्जा।
    (दशवैकालिक-अध्य.-9-4)
11. विविह-गुण-तवोरए निच्चं भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
    तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तव समाहिए।
    (दशवैकालिक अध्य.-9-4)
12. कषायविषयाहार-त्यागो यत्र विधीयते।
    उपवासः स विज्ञेयः शेषं लंघनकं विदुः।। (पूर्वाचार्याः)
13. अणसणमुणोयरिया-वित्तिसंखेवणं रसच्चाओ।
    काय किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होई।।
14. पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झायो।
    झाणं उस्सग्गो वि य अब्भिंतरओ तवो होई।। (आवश्यकसूत्र)

श्री जिनहरिसागरसूरि ज्ञानभंडार लोहावट (मारवाड़) से 76 वर्ष पूर्व प्रकाशित पुस्तिका से साभार यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

साहित्य परिचय

श्री जिनदत्तसूरिजी रचित साहित्य का परिचय

– साध्वी स्मितप्रज्ञाश्रीजी म.

(गतांक से आगे)

(9) गणधर सप्ततिका में गणधरों की स्तुति की गयी है। गणधर सार्धशतक और गणधरसप्ततिका में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

(10) विघ्नविनाशी स्तोत्र में जिन धर्मानुयायी संघ के विघ्नविनाश तथा मंगल प्राप्ति के लिए स्तम्भन पूजित श्री पार्श्वनाथ से अनिष्ट विनाशक श्री वर्धमान, गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी आदि गणधरों से इन्द्रादि देवताओं से अप्रतिचक्रा आदि प्रमुख शासनदेवियों से सत्यपुर निवासी वर्धमान स्वामी जिन भक्त ब्रह्मशान्तियक्ष से, चक्रेश्वरी से अन्य क्षेत्रादि स्थानों में रहने वाले देवी-देवताओं से तीर्थपति वर्धमान सूरि, जिनेश्वरसूरि, जिनचन्द्रसूरि, अभयदेवसूरि एवं जिनवल्लभसूरि आदि से तीर्थ वृद्धि के लिए भी प्रार्थना की गयी है।

(11) सर्वाधिष्ठायी स्तोत्र नामक ग्रन्थ में गणधरों देवताओं, षोडश विद्यादेवियों, यक्षिणी गौमुख मातंग गजमुख आदि यक्षों, चक्रेश्वरी वैरोट्या आदि 24 शासन देवियाँ, दस दिक्पालों, क्षेत्रपालों, नक्षत्र सहित नव ग्रहों तथा धरणेन्द्र शक्रादि से संघ के अमंगलनाश तथा मंगललाभ के लिए प्रार्थना की गयी है।

(12) सुगुरु पारतन्त्र्य नामक ग्रन्थ में सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र्य - इन तीन रत्नों की तरह विधि विषय तथा सुगुरु पारतन्त्र्य को भी मोक्ष का अंग माना गया है और यह भी बताया गया है गुरु पारतन्त्र्य स्वीकार करने से ही मनुष्य को जय प्राप्ति हो सकती है।

(13) श्रुतस्तव में गणधरों एवं अन्य आचार्यों द्वारा विरचित शास्त्रों का निरूपण किया गया है। इसमें जैन सिद्धान्तों का सम्यक् रूप से वर्णन किया गया है। इसके अलावा अन्य सूरियों द्वारा विरचित ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है।

(14) महाप्रभावक स्तोत्र प्राकृत भाषा में रचित स्तोत्रावलि है। इसमें विभिन्न प्रकार के ज्वर और अन्य विभिन्न प्रकार की व्याधियों को दूर करने की प्रार्थना की गयी है। इससे ज्वरों के प्रकार का पूर्ण ज्ञान भी होता है।

(15) सर्वजिन स्तुति में ग्रन्थकार ने श्री ऋषभादि 24 वर्तमान जिनों की स्तुति की है। उनकी स्तुतियाँ प्रजा के लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुई है।

(16) वीर स्तुति नामक ग्रन्थ में महावीर सहित 24 जिनों की स्तुति है। साथ ही सिद्धान्तों एवं शासनदेवियों की प्रार्थना अमंगल परिहारार्थ की गयी है।

(17) चक्रेश्वरी स्तोत्र में श्री चक्रेश्वरी यक्षिणी की स्तुति की गयी है।

(18) अजित शान्ति स्तोत्र में द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ और 16 वें तीर्थंकर शान्तिनाथ भगवान की सुललित पद्यों में भावगर्भित स्तुति की गयी है।

(19) पदव्यवस्था गीर्वाणवाणी निबद्ध इस पुस्तक में युगप्रधानाचार्य द्वितीय स्थानीय सामान्याचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य आदि के नगर प्रवेश आदि के समय किस प्रकार प्रवेश विधि आदि करना चाहिए इत्यादि बातों का निरूपण दिया गया है।

(20) आचार्य जिनदत्तसूरि द्वारा कई ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो अप्रकाशित हैं और अन्य जो अत्यन्त लघुकाय हैं उनकी चर्चा यहाँ नहीं की गयी है।

आचार्य जिनदत्तसूरिजी मात्र जैनागमों के ही अद्वितीय व मार्मिक विद्वान न थे अपितु न्याय, व्याकरण, साहित्य, दर्शन, छन्द, अलंकार, ज्योतिष आदि विषयों के प्रौढ़ विद्वान थे। साहित्यिक दृष्टि से उनकी रचनाएं अत्यन्त प्रौढ़ एवं उदात्त हैं। उनमें न केवल शास्त्रान्तरों के तत्त्वों का ही दिग्दर्शन हुआ है किन्तु साहित्यिक विशेषताओं की उपलब्धि भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। जनता के कल्याण के लिए तथा जनता के प्रचलित उत्सूत्र व अविधिमार्ग के उच्छेद का विधिमार्ग के प्रचार के लिए ही इन ग्रंथों की रचना हुई है। जिन-सिद्धांतों को सरल व सुबोध भाषा में उपस्थित करना इन रचनाओं का उद्देश्य रहा है।

(युगप्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी का जैन धर्म एवं साहित्य में योगदान पुस्तक से साभार)

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास सूची - 2022

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रसारित

1. पू. गुरुदेव गच्छा. आ. श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
पू. गणिवर श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा.
पू. गणिवर श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 9
अरिहंत वाटिका, गलता गेट, मोहनवाड़ी
ट्रांसपोर्ट नगर के पास, दिल्ली जयपुर हाइवे,
पो. जयपुर (राजस्थान) ३०२००३
मुकेश- 79871 51421, व्हाट्सप- 98251 05823
Email: jahajmandir99@gmail.com

.....

2. पू. आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा.
पू. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. ठाणा 2
श्री आदिनाथ जैन श्वे. संघ,
पो. डुठारिया (जिला पाली राजस्थान) 306503

.....

3. पू. आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म. ठाणा.1
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, इतवारी बाजार,
पो. धमतरी- 493773 (छ.ग.)

.....

4. पू. आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म.सा.
पू. मुनि श्री सम्यक्रत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री समर्पितरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री संकल्परत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री संवेगरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री शौर्यरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री सन्मार्गरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री समन्वयरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री संवररत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री शाश्वतरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री समर्थरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री सार्थकरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री श्लोकरत्नसागरजी म.सा. ठाणा 13
पारस कुशल धाम, दानवाडी, दादावाडी
पो. कोटा (राजस्थान) 324009

.....

5. पू. स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.
पू. गणिवर श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मतीशप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 4
श्री दत्त-कुशल आराधना भवन, चेटी स्ट्रीट
पो. तिरुपातुर (जि. वेलुर त.ना.) 635601

.....

6. पू. मुनि श्री ललितप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री शान्तिप्रियसागरजी म.सा. ठाणा 2
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी, एमजी रोड़,
पो. रायपुर-492001 (छ.ग.)

.....

7. पू. मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 1
सम्बोधि धाम, कायलाना रोड़,
पो. जोधपुर - 342004 (राजस्थान)

.....

8. पू. गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मलयरत्नसागरजी म.सा. ठाणा 2
श्री जैन श्वे. मंदिर, नई मण्डी,
पो. हिण्डौन सिटी (जि. करौली राज.) 322230

.....

9. पू. मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मनीषसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री वर्धमानसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री वैभवसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री जयवर्धनसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री आत्मवर्धनसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री गुणवर्धनसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री यशोवर्धनसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री जिनवर्धनसागरजी म.सा. ठाणा 9
श्री वर्धमान पार्श्वनाथ जैन मंदिर, कान्ति नगर,
धन्वंतरी अस्पताल के पीछे, पाल रोड,
पो. जोधपुर (राजस्थान) 342001

.....

10. पू. उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 6
मणिधारी चंपा आराधना भवन, दादावाडी, तलोदा रोड़,
पो. नंदुरबार-425412 (महा.)

.....

11. पू. मुनि श्री विवेकसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री प्रशमसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मैत्रीवर्धनसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री जितवर्धनसागरजी म.सा. ठाणा 4
श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन, हमीरपुरा,
पो. बाडमेर- 344001 (राजस्थान)

.....

12. पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मननप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 3
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना (भावनगर-गुजरात) 364270

.....

13. पू. मुनि श्री ऋषभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री ऋजुप्रज्ञसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री प्रशांतसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री शासनसागरजी म.सा. ठाणा 4
श्री जैनश्वे. मूर्तिपूजक संघ, भगवान महावीर चौक, गोल बाजार,
पो. खैरागढ-491881 जि.-राजनांदगांव (छ.ग.)

.....

14. पू. मुनि श्री विराटसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री विनम्रसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री पुण्यवर्धनसागरजी म.सा. ठाणा 3
ज्ञानकल्याण आराधना भवन, कांस्टिया गली, पीपलिया बाजार,
पो. ब्यावर- 305601 (राजस्थान)

.....

15. पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म.सा. ठाणा 1
एम.आई.जी-84, पुराना शीतलनाथ जैन मंदिर भवन
एम.आई.जी मार्केट के पास, पद्मनाभपुर
पो. दुर्ग (छ.ग.) 491001

.....

16. पू. मुनि श्री विशुद्धसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री हर्षवर्धनसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री नयवर्धनसागरजी म.सा. ठाणा 3
श्री जिनकुशलसूरि जैन छोटी दादावाडी, आर ब्लॉक,
साऊथ एक्स. भाग-2, अंसल प्लाजा के सामने,
पो. नई दिल्ली-110049

.....

17. पू. मुनि श्री चैतन्यसागरजी म.सा. ठाणा 1
योग्य स्थल, **पो. चैन्नई- (त.ना.)**

.....

18. पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री दक्षगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मयणरेहाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 7
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना (भावनगर-गुजरात) 364270

.....

19. पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संयमप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री स्थितप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जागृतदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सहजप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 7
जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ, जवाहरनगर,
पो. जयपुर-302004 (राज.)

.....

20. पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रीतियशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियमेघांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियकृपांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियक्रियांजनाश्रीजी म. ठाणा 5
श्री पुरुषादानीय पार्श्वनाथ जैन श्वे. मू.पू. संघ
65-66 ताना स्ट्रीट, पुरुषवाक्कम,
पो. चैन्नई 600007 (तमिलनाडु)

---

21. पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अभिनंदिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नयनंदिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रेयनंदिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विश्रुतप्रभाश्रीजी म. ठाणा 9
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ,
72/77 नियो ओरनेट बिल्डिंग, दूसरा माला,
पहला पारसीवाडा कोर्नर, नानुभाई देसाई रोड,
पो. मुम्बई (महाराष्ट्र) 400004

22. पू. साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मुक्तिप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री काव्यप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मधुस्मिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री स्मितप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आदर्शप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 7
श्री जिनदत्तसूरि दादावाड़ी, पाल बिचला, विनयनगर
पो. अजमेर (राजस्थान) 305001

.....

23. पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सिद्धांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मित्रांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मोक्षांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुरक्षांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री दर्शनांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नम्रतांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चित्तक्खरांजनाश्रीजी म. ठाणा 8
श्री खरतरगच्छ उपाश्रय, रुषिका एपार्टमेंट,
गिरधर नगर के पास, शाही बाग,
पो. अहमदाबाद- 380004 (गुजरात)

.....

24. पू. साध्वी श्री तरुणप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियमित्राश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मधुस्मिताश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैनश्वे. मूर्तिपूजक संघ, इतवारी बाजार,
पो. धमतरी- 493773 (छ.ग.)

.....

25. पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मृदुलाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मुक्तांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अमृतांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सौम्यांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आराधनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सौम्यनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रेरणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आगमनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संयमरुचिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चित्तलेहांजनाश्रीजी म. ठाणा 14
अरिहंत वाटिका, गलता गेट, मोहनवाड़ी,
ट्रांसपोर्ट नगर के पास, दिल्ली जयपुर हाइवे,
पो. जयपुर (राजस्थान) 302003

26. पू. साध्वी श्री पुष्पाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री समत्वबोधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शुद्धबोधिश्रीजी म. ठाणा 3
श्री विमलनाथ जैन श्वे. मन्दिर, उपाश्रय,
पो. बागबाहरा जि. महासमुन्द (छ.ग.) 493449

.....

27. पू. साध्वी श्री राजेशश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री दक्षाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री काव्ययशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री रम्यगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री हंसकीर्तिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जीतकीर्तिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जयकीर्तिश्रीजी म. ठाणा 8
श्री पार्श्वनाथ जिनालय, जैन मंदिर रोड,
पो. भिलाई-3 (छ.ग.) 490021

.....

28. पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री वसुंधराश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री धर्मोदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सिद्धोदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पुण्यधाराश्रीजी म. ठाणा 5
श्री जैनश्वे. संभवनाथ जिनालय, विवेकानंद नगर,
पो. रायपुर-492001 (छ.ग.)

.....

29. पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सद्गुणाश्रीजी म. ठाणा 2
जैन मंदिर दादावाडी,
पो. महरौली (दिल्ली) 110030

.....

30. पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री तत्वदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शीलगुणाश्रीजी म. ठाणा 4
बाबू माधोलाल धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (भावनगर-गुजरात)

.....

31. पू. साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री भाग्योदयाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री रिषभदेव जैन श्वे मंदिर, गांधी चौक,
पो. नयापारा राजिम (छ.ग.) 493885

.....

32. पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियविनयांजनाश्रीजी म.

पू. साध्वी श्री प्रियमंत्रांजनाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ कुशल भवन, सुनारों का बास
पो. सांचोर-343041 (जालोर-राज.)

.....

33. पू. साध्वी श्री भाग्ययशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सम्यक्रेखाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुवर्णयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नम्रयशाश्रीजी म. ठाणा 4
जैन विद्याशाला, नवघरी, देना बेंक के पास,
पो. पादरा (जि. वडोदरा गुजरात) 391440

.....

34. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 1
जैन श्वे. मंदिर, पद्मावती नगर
अभिनंदन कॉलोनी के पास
पो. मंदसौर (मध्यप्रदेश) 458001

.....

35. पू. साध्वी श्री विजयप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पुण्यनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री रत्ननिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रज्ञानिधिश्रीजी म. ठाणा 4
फूलबाई का उपासरा, त्रिपोलिया बाजार,
पो. रतलाम-457001 (म.प्र.)

.....

36. पू. माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नमनरुचिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री तन्मयरुचिश्रीजी म. ठाणा 9
कुशल वाटिका, बाडमेर-अहमदाबाद हाइवे
पो. बाडमेर (राजस्थान) 344001

.....

37. पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रार्थनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रतिभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियसुधाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रतिष्ठाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रव्रज्याश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रमार्जनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रभावनाश्रीजी म. ठाणा 8
खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी भवन, पंचासरा देरासर पासे,
पो. पाटण जि. पाटण (गुजरात) 384265

.....

38. पू. साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री भाग्योदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संवेगनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कृपानिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कर्त्तव्यनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शुद्धात्मनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शाश्वतनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रवणनिधिश्रीजी म. ठा. 10
जयानन्द भवन, ओसवाल मोहल्ला,
पो. भानपुरा-458775 जि. मन्दसौर (म.प्र.)

.....

39. पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुबोधिश्रीजी म. ठाणा 3
श्री मणिधारी भवन, दादावाडी, श्रीपाद नगर,
पो. इचलकरंजी 416115(जि. कोल्हापुर महा.)

.....

40. पू. साध्वी श्री चंदनबालाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कुशलप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुज्येष्ठाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कैवल्यप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चिन्मयश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कलानिधिश्रीजी म. ठाणा 6
श्री जैन श्वे. चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर,
19, महावीर बाग, एयरपोर्ट रोड,
पो. इन्दौर-452004 (म.प्र.)

---

41. पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मृदुयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सम्यग्निधिश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जिनकुशल सूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट
89/90, गोविन्दप्पा रोड़, बसवनगुडी
पो. बैंगलुरु-560004 (कर्णाटक)

---

42. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चारुलताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री वीरांशप्रभाश्रीजी म. ठाणा 6
जैन श्वे. मंदिर, महात्मा गांधी मार्ग,
पो. खेतिया-451881 (म.प्र.)

.....

43. पू. साध्वी श्री विमलयशाश्रीजी म.

पू. साध्वी श्री जिनाज्ञाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी, 28, रामबाग, गणेश कॉलोनी,
पो. इन्दौर (म.प्र.) 452004

.....

44. पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अमितयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शीलांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री दीपशिखाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जयप्रियाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री परमप्रियाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री स्वरनिधिश्रीजी म. ठाणा 7
श्री जैन श्वे. मंदिर
पो. चौहटन-344702 (जि. बाड़मेर राजस्थान)

.....

45. पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री भव्यपूर्णाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कल्पपूर्णाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जागृतपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ,
पो. मेवानगर 344025 जिला बाड़मेर (राजस्थान)

.....

46. पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
कुशल कान्ति खरतरगच्छ संघ, कुशल वाटिका, पाल रोड़,
पो. सूरत- 395009 (गुजरात)

.....

47. पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अमीवर्षाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री भव्योदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री गुणोदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जिनवर्षाश्रीजी म. ठाणा 5
श्री रिषभदेव जैन श्वे. मंदिर, सदर बाजार,
पो. दुर्ग (छ.ग.) 491001

.....

48. पू. साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुरप्रियाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नित्योदयाश्रीजी म. ठाणा 3
सुगनजी का उपासरा, रांगडी चौक,
पो. बीकानेर 334001 (राजस्थान)

.....

49. पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री समकितप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री स्वस्तिप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 3
जैन श्वे. मू.पू. खरतरगच्छ समिति, दादावाडी,
पो. बून्दी (राजस्थान) 323001

50. पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. ठाणा 1
श्री आदिनाथ जैन श्वे. मंदिर,
पो. रामगंजमंडी 326519 **जिला- कोटा (राजस्थान)**

.....

51. पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियलताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियवंदनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियदर्शांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 6
बृहत् कोलकाता श्री जैन श्वे. श्रीसंघ दादावाडी,
29 बद्रीदास स्ट्रीट, गौरी बाडी, माणिकतल्ला,
पो. कोलकाता- 700006 (प.बं.)

.....

52. पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री खरतरगच्छ धर्मशाला, चूडीघरों का मोहल्ला
पो. फलोदी 342301 (राजस्थान)

.....

53. पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जयरत्नाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नूतनप्रियाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री तत्त्वज्ञलताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पर्वप्रभाश्रीजी म. ठाणा 5
श्री आदिनाथ जैन श्वे. संघ,
पो. डुठारिया (जिला पाली राजस्थान) 306503

.....

54. पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियनंदिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विनम्रप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी बाड़मेर ट्रस्ट,
महावीर मार्ग, कॅम्प रोड,
पो. मालेगाँव-423203 (जि. नासिक महा.)

.....

55. पू. साध्वी श्री प्रभंजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुव्रताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चिद्यशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री श्रद्धानिधिश्रीजी म. ठाणा 4
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर,
महावीर पार्क, नागौरी गार्डन,
पो. भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)

.....

56. पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री योगांजनाश्रीजी म.

पू. साध्वी श्री संवेगप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री कोठी जैन श्वे. अजितनाथ पार्श्वनाथ टेंपल, सुलतान बाजार,
पो. हैदराबाद (तेलंगाना) 500095.

.....

57. पू. साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियवर्षाजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियकृतांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री दत्त-कुशल आराधना भवन, चेटी स्ट्रीट
पो. तिरुपातुर (जि. वेलुर, त.ना.) 635601

.....

58. पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियशुभांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
जय परिसर, तिलक नगर,
पो. पाली (राजस्थान) 306401

.....

59. पू. साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रशमिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अर्हम्निधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री भव्यप्रियाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री बाडमेर खरतरगच्छ भवन, नवकार कॉलोनी, गांधीपुरा,
पो. बालोतरा-344022 (जि. बाड़मेर-राज.)

.....

60. पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री श्रेयनंदिताश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी उपाश्रय,
पो. धोरिमन्ना 344704 जिला-बाडमेर (राज.)

.....

61. पू. साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संवरबोधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शाश्वतबोधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शौर्यबोधिश्रीजी म. ठाणा 4
द्वारा आ.श्री राजेन्द्र जयानंदसूरि भवन, रामनगर, आंबावाडी, साबरमती,
पो. अहमदाबाद (गुजरात) 380006

.....

62. पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रमुदिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मननप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री महावीर स्वामी जैन श्वे. संघ,
15-1-494, जैन मंदिर मार्ग, फीलखाना,
पो. हैदराबाद- 500012 (आ.प्र.)

.....

63. पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कल्याणमालाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (गुंजरात)

64. पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री अमीझराश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मेरुशिलाश्रीजी म.
जैन दादावाडी, श्रीमालों का मोहल्ला
पो. झुंझनू- 333001 (राजस्थान)

.....

65. पू. साध्वी श्री श्रुतदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सुज्ञप्रभाश्रीजी म. ठाणा 2
खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी भवन, पंचासरा देरासर पासे,
पो. पाटण (गुजरात) 384265

.....

66. पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री रत्ननिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री यशोनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सिद्धांतनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री स्वर्णनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री साध्यनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सूर्यनिधिश्रीजी म. ठाणा 7
श्री महावीर जिनालय, न्यू राजेन्द्र नगर,
पो. रायपुर (छ.ग.) 492001

---

67. पू. साध्वी डॉ. श्री संयमज्योतिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संयमगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संयमसाक्षीश्रीजी म. ठा. 3
मोहन बाग, गिरि विहार होस्पीटल के पास,
पो. पालीताणा (भावनगर-गुजरात) 364270

.....

68. पू. साध्वी. श्री नीलांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री योगरुचिश्रीजी म. ठाणा 3
जिनदत्तसूरि दादावाडी, सूरज पोल के बाहर,
मेवाड़ मोटर्स लिंक रोड़
पो. उदयपुर-313001 (राज.)

---

69. पू. साध्वी श्री प्रशमरसाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पावनरेखाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री महावीर स्वामी जैन श्वे. मंदिर, गली नं. 2
बरकत नगर, टोंक फाटक,
पो. जयपुर (राजस्थान) 302015

.....

70. पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियवीरांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियपुण्यांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियपूर्वांजनाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी, खापर रोड,
पो. अक्कलकुआं-425412 (जि. नंदुरबार महा.)

71. पू. साध्वी श्री अतुलप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आत्मरुचिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री धैर्यनिधिश्रीजी म. ठाणा 3
श्री शांतिनाथ मंदिर उपाश्रय, लोढों का वास,
पो. पाली- 306401 (राजस्थान)

.....

72. पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियज्ञानांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियदक्षांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री वासुपूज्य भगवान जैन मन्दिर
दादावाड़ी, न्यू प्लॉट,
पो. अमलनेर-425401 (जिला-जलगांव महा.)

.....

73. पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियदिशांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री मणिधारी भवन, अम्बिका सोसायटी,
दरगाह रोड़,
पो. नवसारी-396445 (गुजरात)

.....

74. पू. साध्वी श्री दीपमालाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री धर्मनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शंखनिधिश्रीजी म. ठाणा 3
दादा साहेब नां पगला, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद- 380009 (गुजरात)

.....

75. पू. साध्वी श्री अनंतदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सत्त्वबोधिश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जैन श्वे. संस्था, ए-715 रूंगटा हॉस्पीटल
के सामने, शिव मार्ग, मालवीय नगर,
पो. जयपुर-302017 (राजस्थान)

.....

76. पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विरतिप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विशुद्धप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मितांशप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4
जैन मंगल भवन, मेन रोड,
पो. तलोदा-425413 (जिला नंदुरबार-महा.)

.....

77. पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री स्वर्णोदयाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सत्वोदयाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ शीतलवाडी उपाश्रय,
गोपीपुरा, सुभाष चौक, ओसवाल मोहल्ला,
पो. सूरत- 391440 (गुजरात)

.....

78. पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 1
श्री आदिनाथ जैन मंदिर दादावाडी, नयापुरा
पो. मंदसौर-458001 (म.प्र.)

.....

79. पू. साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सद्भावनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री पुनीतप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर,
सराफा बाजार, वैरागपुरा गली, लश्कर,
पो. ग्वालियर-474001 (म.प्र.)

.....

80. पू. साध्वी श्री प्रगुणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रमोदिताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रशमनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संस्कारनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री सत्कारनिधिश्रीजी म. ठाणा 5
श्री जैन श्वे. महावीर जिनालय, विकास नगर,
पो. नीमच (म.प्र.) 458441

.....

81. पू. साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विधिरत्नाश्रीजी म. ठाणा 2
9/बी, खरतरगच्छ उपाश्रय,
दूधेश्वर सोसा., आजवा रोड,
पो. वडोदरा (गुजरात) 390019

.....

82. पू. साध्वी श्री संयमनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री आत्मनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संवररुचिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री तत्वरुचिश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन श्वे. संस्था, सोडाला आई-1,
वशिष्ठ मार्ग, श्यामनगर
पो. जयपुर (राज.) 302019

.....

83. पू. साध्वी श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शुक्लप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री महाप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर,
94 अम्मन कोइल स्ट्रीट,
पो. चेन्नई 600079 (तमिलनाडु)

.....

84. पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री ऋजुप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री नम्रप्रज्ञाश्रीजी म.

पू. साध्वी श्री ऋद्धिप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 5
बाड़मेर जैन श्रीसंघ,
कुशल दर्शन रेजिडेन्सी, पर्वत पाटिया
पो. सूरत-395010 (गुजरात)

.....

85. पू. साध्वी श्री संवेगप्रज्ञाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जैन श्वे. श्रीमाल सभा, दादावाडी, मोतीडुंगरी रोड,
पो. जयपुर 302004 (राजस्थान)

.....

86. पू. साध्वी श्री अक्षयनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री क्षमानिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कल्पनिधिश्रीजी म. ठाणा 3
विचक्षण भवन, महाराणा प्रताप बाजार, पुरानी चौक,
पो. टोंक (राज.) 304001

.....

87. पू. साध्वी श्री वैराग्यनिधिश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री जयणाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री ऋजुमनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. मंदिर, रोशन मोहल्ला
पो. आगरा-282003 (यू.पी.)

.....

88. पू. साध्वी श्री शांतरेखाश्रीजी म. ठाणा 1
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड,
पो. पालीताणा जि. भावनगर (गुजरात) 364270

.....

89. पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री ज्ञानप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री चारित्रप्रभाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जिनेश्वरसूरि खरतरगच्छ भवन
तलेटी रोड़, कैलाश स्मृति धर्मशाला के पास
पो. पालीताणा जि. भावनगर (गुजरात) 364270

.....

90. पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विपुलप्रभाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री कृतार्थप्रभाश्रीजी म. ठाणा 3
मणिधारी चंपा आराधना भवन, दादावाडी, तलोदा रोड़,
पो. नंदुरबार-425412 (महा.)

91. पू. साध्वी श्री प्रियमुद्रांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियहितांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
ए 102, वेस्टर्न शिखरजी, मधुबन सर्कल के पास,
ग्रीन सिटी रोड, पाल
पो. सूरत (गुजरात) 395009
92. पू. साध्वी श्री श्वेतांजनाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री प्रियांजनाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जैन श्वे. मू.पू. संघ, मेन बाजार,
पो. कालावड 361160 (जि. जामनगर गुजरात)

पू. मोहनलालजी म. का समुदाय
आज्ञा- पू. गणाधीश पं. श्री विनयकुशलमुनिजी म.

1. पू. गणाधीश पं. श्री विनयकुशलमुनिजी म.सा.
पू. श्री नंदीषेणमुनिजी म.सा.
पू. श्री विरागमुनिजी म.सा.
पू. श्री भव्यमुनिजी म.सा. ठाणा 4
श्री अजितनाथ जैन श्वे. मंदिर,
भगवान महावीर वार्ड, भाजी मंडी, इतवारी,
पो. नागपुर (महाराष्ट्र) 440002

.....

2. पू. श्री विनयमुनिजी म.
पू. श्री मुक्तिमुनिजी म.
पू. श्री शाश्वतमुनिजी म. ठाणा 3
सादडी भवन की गली में, आइडिया टॉवर के पास
पो. पालीताना (जि.भावनगर-गुजरात) 364270

.....

3. पू. साध्वी श्री कुशलश्रीजी म. ठाणा 1
श्री केसरियानाथ धर्मशाला, मोती चौक,
पो. जोधपुर (राजस्थान) 342001

.....

4. पू. साध्वी श्री विरतियशाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विनम्रयशाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री अजितनाथ जैन श्वे. मंदिर,
भगवान महावीर वार्ड, भाजी मंडी, इतवारी,
पो. नागपुर (महाराष्ट्र) 440002

मुनि भगवंत	=75,
साध्वी भगवंत	=309
कुल योग	=384
मुनि भगवंत के चातुर्मास	=19
साध्वी जी के चातुर्मास	=77
कुल चातुर्मास	= 96

卐 नूतन पदारोहणपद
1. पू. गणि मनितप्रभसागरजी म. उपाध्याय
2. पू. मुनि मेहुलप्रभसागरजी म. गणी

जयपुर में चातुर्मास प्रवेश संपन्न

जयपुर 10 जुलाई। परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ठाणा 9 एवं पूजनीया साध्वी रत्ना श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का जयपुर नगर में चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश रविवार आषाढ सुदि 11 ता. 10 जुलाई 2022 को अत्यन्त आनंद उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

कटला मंदिर से शोभायात्रा का प्रारंभ हुआ जो सांगानेरी गेट, जौहरी बाजार होती हुई मोतीसिंह भोमियों के रास्ते पर स्थित शिवजीराम भवन पहुँची। जहाँ पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य आचार्यश्री ने दादा गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजली अर्पण करते हुए उनके उपकारों का वर्णन किया। उन्होंने पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. का स्मरण करते हुए कहा- हम तीनों की दीक्षा एक साथ आज से पचास वर्ष पूर्व पालीताना में हुई थी। यह चातुर्मास साथ ही करने का भाव था, पर पूजनीया माताजी म. का स्वास्थ्य अस्वस्थ होने के कारण चातुर्मास बाडमेर करना पडा।

उन्होंने कहा- हमें अपने जीवन में मर्यादा का पालन करना जरूरी होता है। मर्यादा के अभाव में कोई भी संघ, गच्छ या समुदाय प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने कहा- यदि कहीं पर भी एकता में बाधाऐं आ रही हैं, तो हमें अनेकता के कारणों की खोज करनी चाहिये। अनेकता के कारणों की खोज किये बिना और उन्हें दूर किये बिना कभी भी एकता नहीं हो सकती।

उन्होंने कहा- सबसे बडी समस्या यही है कि जो लोग अनेकता के कारण थे, वे ही आज एकता की बातें करते हैं।

इस अवसर पर पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने अपने उद्‌बोधन में कहा- जैसे चिडिया अपने बच्चे को उडना सिखाती है वैसे ही गुरुदेव भी चातुर्मास में अध्यात्म के आकाश में उडना सिखायेंगें। सभी को उपदेश सुनकर जीवन में उतारना है।

पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने कहा- इस चातुर्मास को हमें साधना, आराधना, त्याग तप से सार्थक करना है। पूज्यश्री के श्रीमुख से जिनवाणी का पान करना है। क्योंकि गुरु से जीवन शुरु होता है। जीवन में मंगल को करने वाले गुरु होते है।

पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने कहा- पूज्य आचार्य श्री के चातुर्मास का अनूठा लाभ जयपुर वालों को मिला है, तो हमें उसका पूरा पूरा लाभ उठाना है।

साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ने कहा- चातुर्मास में हमें तप त्याग का वातावरण बनाते हुए अपने जैनत्व को सार्थक करना है।

इस अवसर पर साध्वी हेमप्रज्ञाश्रीजी म., संघवी तेजराजजी गुलेच्छा बैंगलोर, सुरेश भंसाली रायपुर, सुरेश लूणिया चेन्नई, खरतरगच्छ युवा परिषद् जयपुर शाखा, समकित शंखेश संभव बेंगानी जयपुर, सौ. प्रमिला चौपडा उज्जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन राजकुमारजी बेंगानी ने किया। इस अवसर पर बैंगलोर, उज्जैन, ब्यावर, बालोतरा, पाली, बाडमेर, अहमदाबाद, चेन्नई, दिल्ली, सूरत, सिणधरी, चितलवाना, सांचोर, बीकानेर आदि कई क्षेत्रों से श्रद्धालुओं का पधारना हुआ।

गुरु पुर्णिमा पर्वोत्सव संपन्न

जयपुर 13 जुलाई। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में गुरु पूर्णिमा पर्वोत्सव अत्यन्त आनंद उल्लास व समर्पण भावों के साथ जयपुर में मनाया गया।

पूज्यश्री विचक्षण भवन से विहार कर अरिहंत वाटिका मोहनवाडी पधारे, जहाँ पूज्यश्री का मंगल प्रवेश करवाया गया। गुरु पूर्णिमा के इस पावन पर्व पर पूरे भारत के गुरु भक्त पधारे थे। आयोजन जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ जयपुर के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् जयपुर शाखा द्वारा किया गया था। केयुप की 40 से अधिक शाखाओं के युवा आज यहाँ जयपुर में इस समारोह में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने गुरु महिमा का वर्णन किया। समर्पण की व्याख्या समझाई। पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने पूज्यश्री के रचना संसार की काव्यात्मक व्याख्या की। पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने पूज्यश्री की विशिष्टताओं का वर्णन किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने पूज्यश्री के संबंध में अपने अनुभव सुनाये। पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ने गुरु शब्द की व्याख्या की। पूज्य साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. ने पूज्यश्री के गुणों की विवेचना की।

इस अवसर पर पूर्व पुलिस महानिदेशक राजीव दासोत, जयपुर केएमपी शाखा, पुण्य चोरडिया जयपुर, अभिषेक राक्यान जयपुर, आरती देवी चण्डालिया बेंगलोर, अनूपजी पारख जयपुर, शीवी दफ्तरी जयपुर, सीमा दफ्तरी जयपुर, सुरेश भंसाली रायपुर, सुरेश लूणिया चेन्नई, शैलेष ललवानी इचलकरंजी, केयुप जयपुर शाखा, ध्वज गांधी चितलवाना, मुमुक्षु समर्थ गुलेच्छा वेल्लुर, मुमुक्षु संयम जैन, मुमुक्षु भरत गांधी चितलवाना, मुमुक्षु प्रेम कवाड तिरुपातूर, मुमुक्षु महावीर मालू धोरीमन्ना, मुमुक्षु अक्षय मालू बाछडाउ, मुमुक्षु संदीप कोचर रायपुर, मुमुक्षु आकाश लूणिया कोलकाता, मुमुक्षु भावना संखलेचा बाडमेर आदि ने अपने वक्तव्यों से गुरु समर्पण भाव अभिव्यक्त किया।

इस अवसर पर स्वर्ण मुद्रा से पूज्यश्री का नवांगी पूजन किया गया। जिसका लाभ मोकलसर निवासी संघवी श्री शांतिदेवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा परिवार ने लिया। कामली वहोराने का लाभ श्री प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढा परिवार जयपुर वालों ने तथा रजत चावलों से बधाने का लाभ जयपुर निवासी श्रीमती कुसुम देवी मुन्नीलालजी डागा परिवार ने लिया।

इस अवसर पर बाहर से बडी संख्या में भक्तगणों का आगमन हुआ।

कोरबा में प्रतिष्ठा 13 मार्च को

जयपुर 13 जुलाई। छत्तीसगढ प्रान्त के कोरबा नगर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के पावन सानिध्य में संपन्न होगी।

ता. 13 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर कोरबा श्री संघ ने पूज्यश्री से प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने व प्रतिष्ठा कराने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने चैत्र वदि 6, ता. 13 मार्च 2023 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। यह ज्ञातव्य है कि सन् 2017 में पूज्यश्री एवं पूजनीया माताजी म. बहिन म. आदि सम्मेतशिखरजी राजगृही के विहार में कोरबा पधारे थे। कोरबा श्री संघ की उस विहार यात्रा में अनुमोदनीय सेवा रही थी। उस समय पूज्यश्री ने जिनमंदिर की प्रेरणा दी थी। उसी समय श्री गौतमचंदजी मुकेशजी कोचर परिवार ने विशाल भूखण्ड जिन मंदिर निर्माण हेतु अधिग्रहण किया था।

नचिकेता गुरुकुल में गच्छाधिपतिश्री का प्रवास

जयपुर 7 जुलाई। खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज दि. 7 जुलाई को सांगानेर दादावाडी से विहार कर नचिकेता गुरुकुल पधारे। मानसरोवर के नचिकेता गुरुकुल परिसर में 7 जुलाई सायंकाल प्रवचन एवं आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया। जयपुर में आचार्यश्री का यह प्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम था।

हिन्दू संस्कृति के अनुसार प्रचलित नचिकेता गुरुकुल ने आचार्यश्री के आगमन पर पर्युषण महापर्व पर 8 दिन जमीकंद नहीं बनाने का निर्णय किया।

जैनाचार्यश्री ने यहाँ पढ़ने वाले छात्रों को नचिकेता के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि वैदिक एवं जैन संस्कृति में अनेक समानताएं हैं। उन्होंने सभी छात्रों को आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में ज्योति कोठारी ने जैनविधि से गुरुवंदन करवाया। सांसद रामचरण बोहरा एवं नचिकेता गुरुकुल के पदाधिकारियों ने जैन विधि से गुरुपूजन किया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष नरेंद्र हर्ष, सांसद रामचरण बोहरा आदि ने आचार्यश्री को संस्था के प्रधान मार्गदर्शक की पदवी से सम्मानित किया।

गुरुकुल के सचिव देवेंद्र धाकड़ ने संस्था का परिचय दिया एवं कोषाध्यक्ष डॉ. के. सी. परवाल ने स्वरचित काव्यग्रंथ श्रीकृष्णम गुरुदेव को भेंट किया।

कार्यक्रम संचालन एवं गुरुदेव का परिचय वरिष्ठ उपाध्यक्ष ज्योति कुमार कोठारी ने दिया। उपस्थित जन समुदाय में जैन समाज के अनेक पदाधिकारी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर खरतरगच्छ संघ, जयपुर द्वारा गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए 4 महीने की भोजन सामग्री देने की घोषणा की गई।

आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज ने गुरुकुल के नवनिर्मित पुस्तकालय का उद्घाटन किया। उनके द्वारा देवाधिदेव भगवान श्री महावीर स्वामी का चित्र गुरुकुल के मंदिर में स्थापित किया गया। सांसद श्री बोहरा ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया एवं गुरुकुल के छात्रों के लिए एक बस देने की घोषणा की। जयपुर के माननीय सांसद ने पुस्तकालय कक्ष में आचार्यश्री का चित्र भी स्थापित किया।

संस्था की महिला विंग ने भी आचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

हैदराबाद में कल्याणक महोत्सव आयोजित

हैदराबाद 31 जुलाई। फीलखाना स्थित श्री महावीर भवन में पूज्या साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा. एवं पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म. की निश्रा में नेमिनाथ जन्म कल्याणक का आयोजन रमेश भाई पोरवाल द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रचार संयोजक उत्तम संकलेचा, भरत भंसाली, श्रवण छाजेड़ ने किया। शौर्यपुरी नगरी का उद्घाटन आर.के. स्टील परिवार द्वारा किया गया, जिसके उद्घाटन का लाभ कांतिलाल, श्रवण, सुनील संकलेचा परिवार ने लिया। राजा-रानी बनने का लाभ मूलचंद जसराज बाफना ने परिवार लिया। पूज्या साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म. ने बताया कि किस तरह नेमिनाथ भगवान की बारात में मूक पशुओं की करुण पुकार सुनकर नेमिनाथ भगवान का मन बदल गया और उन्होंने अपनी बारात को वापस फेर लिया और संयम लेने का निर्णय किया। कार्यक्रम में श्री दंतेश्वरी जैन सेवा मंडल ने सेवा प्रदान की।

इस अवसर पर श्री संघ के अध्यक्ष मदनराज शाह, मंत्री हस्तीमल हुंडिया, अशोक वजावत, मोतीलाल ललवानी, ललित संकलेचा, बाबूलाल संकलेचा व अन्य उपस्थित थे। चातुर्मास समिति के संयोजक कांतिलाल संकलेचा, विक्रम ढड्ढा, खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष ललित संकलेचा ने कार्यक्रम में सहयोग दिया।

मुंबई में हुआ हर्षोल्लास के साथ मंगल प्रवेश

मुम्बई 10 जुलाई। सी.पी. टेंक, ठाकुरद्वार रोड के हालाई लोहाणा महाजन वाडी में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुम्बई के तत्त्वावधान में यशस्वी चातुर्मास 2022 में पू. अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहेब की आज्ञानुवर्तिनी पू. महत्तरापद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म. सा. की विदुषी शिष्या पू. मारवाड़ ज्योति खानदेश ज्योति गच्छ गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी स्नेह सुरभि खान्देश रत्ना श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 9 का मंगल प्रवेश गाजते बाजते हुआ।

श्री शांतिनाथजी जैन मंदिर विल्सन स्ट्रीट से प्रारम्भ शोभायात्रा में सैंकड़ों भाविकों ने शिरकत की। प्रवेश शोभायात्रा महानगर के मुख्य मार्गों से होती हुई लोहाणा महाजनवाडी पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। पूज्य गुरुवर्याश्रीजी के श्रीमुख से मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। संघ के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जे. जैन ने सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए अपने भाव प्रकट किए। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध संगीतकार अनिल भाई सालेचा एवं आशिष भाई ने अपनी मधुर आवाज से एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी। और इस बीच प्रसिद्ध लघु कहानी वक्ता श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, विख्यात कवयित्री श्रीमती मंजूजी लोढ़ा एवं सेवाभावी डॉ. एम. एम. बेंगानीजी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। सभी का श्री संघ द्वारा बहुमान किया गया।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् के नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ। चातुर्मास मंगल प्रवेश के शुभ

अवसर पर हुबली, खेतिया, नंदुरबार, अहमदाबाद, बाड़मेर, इचलकरंजी, चैन्नई आदि नगरों से धर्मप्रेमी महानुभावों का आगमन हुआ।

साथ ही महानगर के भिवंडी, बोरीवली, वरली, भायंदर से गुरुभक्त उपस्थित रहे। कार्यक्रम के पश्चात स्वामीवात्सल्य का आयोजन था जिसका लाभ श्रीमती संतीदेवी जावंतराजजी मोदी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। संघ की ओर से लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया।

पूज्य साध्वीजी हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में चातुर्मास में अधिक से अधिक विविध धर्म आराधना से जुड़कर अपने आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होने का आह्वान किया। संघ के महामंत्री श्री कांतिलाल बोकड़िया द्वारा सभी महानुभावों को धन्यवाद दिया गया।

–धनपत कानुंगो मुम्बई

प्रेरणा

हलचल में आने के बजाय प्राथमिकता निर्धारित करें। योजना बनाएँ और उसे पूरा करें... क्योंकि अत्यधिक व्यस्तता ही अच्छी सोच का सबसे बड़ा दुश्मन है। आज से हम हड़बड़ाहट में आने के बजाय हर कर्म शांत मन से करें...

हैदराबाद से शत्रुंजय संघ मुहूर्त्त प्रदान

जयपुर 13 जुलाई। गुरु पूर्णिमा के दिन मूल चण्डावल वर्तमान में हैदराबाद निवासी श्री मोतीलालजी अमरचंदजी श्रीश्रीमाल परिवार ने पूज्यश्री से संघ यात्रा का मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। हैदराबाद से यात्रा प्रवास रहेगा। बाद में सोनगढ से छह री पालित संघ का आयोजन होगा। पूज्यश्री ने विनंती स्वीकार कर मुहूर्त प्रदान किया। तदनुसार दिनांक 29 दिसंबर 2022 को हैदराबाद से संघ का प्रस्थान होगा। दिनांक 4 जनवरी को सोनगढ से संघ का प्रयाण होगा। संघपति माला विधान शत्रुंजय महातीर्थ पर दिनांक 8 जनवरी 2023 को होगा।

पुण्यतिथि पर गुरु इकतीसा पाठ

बीकानेर 10 जुलाई। पूज्या महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी मृगावतीश्रीजी म.सा., बीकानेर मूल की साध्वी श्री सुरप्रियाश्रीजी म.सा व पू. साध्वी नित्योदयाश्रीजी म.सा के सान्निध्य में दि. 10 जुलाई को प्रथम दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरीश्वरजी के 868वें स्वर्गारोहण दिवस पर रांगड़ी चौक के सुगनजी महाराज के उपासरे व उदयरामसर दादाबाड़ी में गुरु इकतीसा का सामूहिक पाठ व पूजा तथा नाहटा चौक के बसंत नाहटा के निवास पर भक्तामर का पाठ व पूजा की गई। अनेक श्रावक-श्राविकाओं में उपवास व आयम्बिल की तपस्या की तथा प्राणियों की आत्मशांति के लिए प्रार्थना की गई।

पू. साध्वी मृगावतीश्रीजी म. ने प्रवचन में कहा कि जग में न दूजे ऐसे गुरु है, मरुधर में भी जो कल्पतरु। बावन वीर 64 जोगनिया और रहे देवता चरणों में चाकर, जय दादा जिनदत्तसूरीश्वर युगप्रधान गुरु ज्ञान दीवाकर। प्रथम दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरीश्वरजी की स्वर्रोहण दिवस पर उनके आदर्शों का स्मरण करते हुए भक्ति के साथ वंदना करें।

पू. साध्वी नित्योदयाश्रीजी म. ने गुरु स्तुति- 'दासानुदासा इव सर्व देवा' सुनाते हुए कहा कि दादा गुरुदेव की भाव से भक्ति करने से रोग, शोक दूर होते है तथा आर्थिक व पारमार्थिक उन्नति होती है।

उदयरामसर दादाबाड़ी में सुश्रावक भंवरलाल कंवरलाल कोठारी परिवार की ओर से सामूहिक प्रसाद व पूजा का आयोजन रखा गया। वर्षा के बावजूद बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने संगीतमयी पूजा व भक्ति तथा प्रसाद में भागीदारी निभाई। श्रावक-श्राविकाओं के लिए भांडाशाह जैन मंदिर के पास से विशेष बसों की व्यवस्था की गई।

राजनांदगाँव में ज्ञान वाटिका का सुयश

राजनांद गांव 23 जुलाई। परम श्रद्धेय पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा, मंगल आशीर्वाद व सज्जनमणि प्रवर्तिनी पू. साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. के मार्गदर्शन में खरतरगच्छ महिला परिषद राजनांदगाँव शाखा द्वारा गत वैशाख सुदि एकादशी, 12 मई को ज्ञान वाटिका प्रारंभ की गई। जहाँ लगभग 80 महिलाएँ प्रतिक्रमण सूत्रों का अभ्यास कर रही है व श्रीमती सुशीलाजी कोठारी, श्रीमती अंजुजी कोठारी, संगीता बरडिया, अनिता चौरडिया, जया झाबक व सरोज गोलछा शिक्षिका के रुप मे अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

डुठारिया में चातुर्मास प्रवेश

डुठारिया 9 जुलाई। वसीमालाणी रत्नशिरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा., मुनि नयज्ञसागरजी म.सा. एवं पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्तिनी पू. साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म. , पू. साध्वी जयरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी तत्त्वज्ञलताश्रीजी म. और पू. साध्वी पर्वप्रभाश्रीजी म. का डुठारिया में चातुर्मास हेतु ऐतिहासिक नगर प्रवेश हुआ। इस अवसर पर राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र से गुरुभक्त पधारे।

तिरपातुर में चातुर्मास प्रवेश

तिरपातुर 10 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. सा. एवं गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 एवं पू. गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का दिनांक 10.07.2022 को विजयशांति स्कुल से विहार कर तिरपातुर में चातुर्मास हेतु मंगलमय प्रवेश हुआ।

सर्वप्रथम जिनालय में दर्शन के पश्चात धर्मसभा का आयोजन हुआ। मंगलाचरण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रफुल्ल कवाड़ ने किया। छोटे बच्चों द्वारा नृत्य, महिला मंडल द्वारा संगीत, बच्चों द्वारा संवाद इत्यादि प्रस्तुतीकरण किया गया। कार्यक्रम में विविध प्रांतों से अतिथि गण पधारे जिसमें सिंधनूर चेन्नई फलोदी वेल्लूर हैदराबाद कुन्नूर सेलम कृष्णगिरी से पधारे।

पूज्य गणिवर्य द्वारा चातुर्मास की महिमा बताई गयी और कहा यह चातुर्मास हमारे लिए जीवन के परिवर्तन का अवसर लाया है स्वाध्याय और कल्याण करने का श्रेष्ठ अनुष्ठान है। आज दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरिजी म. की 868वीं पुण्यतिथि भी है। उनके उपकारों का स्मरण करना है। जैन जगत के महान आचार्य ने हमें जैनत्व प्रदान कर हम पर महान उपकार किया है।

तिरपातुर नगर की कुलदीपिका पू. साध्वी प्रियवर्षांजनाश्रीजी म. द्वारा उद्‌बोधन दिया गया। उन्होंने कहा– इस चातुर्मास में आराधना साधना से जुड़े रहना है अपनी आत्मा की सदैव चिंता करनी है।

अंत में अतिथियों का संघ द्वारा बहुमान किया गया

दि. 24 जुलाई रविवार के दिन जिनालय में प्रातः 7 बजे परमात्मा का ढोल नगाड़े के साथ महाभिषेक हुआ। कवाड़ परिवार के द्वारा नवकारसी का आयोजन किया गया।

तिरपातुर के बालकों एवं युवकों द्वारा रत्नत्रयी की स्पर्शना का कार्यक्रम साध्वी कृतांजनाश्रीजी के मार्गदर्शन में हुआ।

संकलन पूजा कपिल मेहता जोधपुर

सांचोर में चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश

सांचोर 10 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की आज्ञानुवर्तिनी पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका गच्छगणिनी पूज्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या तपोरत्ना पूज्या साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. एवं पूज्या साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा-4 का सांचौर नगर में दि. 10 जुलाई को भव्य प्रवेश संपन्न हुआ।

सुबह 8 बजे कुंथुनाथ जैन धर्मशाला से गाजे-बाजे के साथ प्रवेश शोभायात्रा में बैंड, ढोल, सिर पर मंगल कलश धारण किए हुए महिला मंडल एवं बालिका मंडल, जैन ध्वज लिए पाठशाला के बच्चे, पुरुष वर्ग एवं महिलाओं के साथ रवाना हुआ। प्रवेश नगर के मार्गों से से होते हुए कुशल भवन में पहुंचकर धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। जहां पर सभी गुरुभक्त एवं महिलाओं द्वारा गुरुवर्याश्री को गुरुवंदन कर बधाया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री केवलचंदजी बोहरा ने किया। श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ सांचौर के अध्यक्ष भूपेंद्रजी बोथरा ने बाहर से पधारे हुए सभी मेहमानों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। श्री जिनकुशल बालिका मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। प्रवेशोत्सव में गौरव मालू एंड पार्टी ने स्तवनों की प्रस्तुति कर अभिनंदन किया। श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन श्री संघ के अध्यक्ष सी.बी. जैन ने भी अपने भाव व्यक्त किए। साथ ही प्रकाशचंदजी कानूनगो एवं जेठमलजी बोथरा आदि वक्ताओं ने उद्‌गार व्यक्त किए।

पूज्या साध्वीजी ने कहा- हमें इस चातुर्मास में धार्मिक क्रियाओं और जिनवाणी का श्रवण कर अपने जीवन में परिवर्तन लाना है। चातुर्मास को सफल बनाना है। साथ ही ने गुरुदेव के उपकारों को बताते हुए कहा कुछ लोग ऐसे होते है जो इतिहास बनाते है। ऐसे ही परम उपकारी युगप्रधान प्रथम दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज के 868वीं स्वर्गारोहण जयंति पर उनके उपकारों को बताया।

दोपहर 2 बजे दादा गुरुदेव की पूजा भी संघ द्वारा भक्तिमय माहौल से करवाई गई। कार्यक्रम के समापन पर नरेशजी बोथरा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रवेश के इस कार्यक्रम श्री दादा जिनदत्तसूरि मंडल, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद, जिनकुशल बालिका मंडल के सभी कार्यकर्ताओं का सेवा में सराहनीय योगदान रहा।

समाज के गणमान्य लोग, मुंबई, अहमदाबाद, बालोतरा, कारोला, हाड़ेचा, झाब आदि शहरों से गुरु भक्त पधारे।

तलोदा में चातुर्मास प्रवेश

तलोदा 1 जुलाई। पू. गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी गणिनीपद विभूषिता, मारवाड़ ज्योति गुरुवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. एवं खानदेशरत्ना, स्नेह सुरभि पू. श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य चातुर्मास प्रवेश ता० 1 जुलाई को हुआ।

विशाल जन-समुदाय के साथ वाजते गाजते नृत्य करते हुए 11 बजे मंगल भवन पधारे। सबसे पहले एक जैसी पोषाक में शकुन लेकर बालिकाओं ने स्वागत किया। महिलाओं ने मंगल कलशों से स्वागत किया, स्वागत गीत गाया। ज्ञानवाटिका के बच्चों ने नयन-रम्य नृत्य किया। इस समारोह का संचालन यश और उज्जव कोचर ने किया। दौंडाइचा से चिंतन कोचर ने अपनी मधुर ध्वनी से संगीत के माध्यम से रंग जमाया। बाहर गांवों से अनेक लोग उपस्थित थे। फिर साध्वीश्री को कामली ओढाने का चढ़ावा श्री प्रकाशजी कोचर ने लिया। गुरु पूजन का लाभ दौंडाइचा से नीलेश भाई बाफना परिवार ने लिया। बाद में साध्वीश्री ने सबको संबोधित करते हुए कहा- चातुर्मास हमारी आत्म जागृति के लिए आया है। 120 दिन में जिनवाणी का श्रवण करना है और अपनी आत्मा का कल्याण करना है।

दि. 30 जुलाई को बालक-बालिकाओं के द्वारा नेमिनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक एवं खरतरगच्छ दिवस के उपलक्ष में नाटिका की प्रस्तुति की गई।

डुठारिया में गुरुपूर्णिमा समारोह संपन्न

डुठारिया 13 जुलाई। पाली जिले के डुठारिया नगर में ६५ वर्षों बाद खरतरगच्छ के आचार्य साधु साध्वी भगवंतों के चातुर्मास से संघ में उत्सव का और मंगलमय वातावरण बना हुआ है। पू. आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. ने प्रवचन में कहा- जब गुरु के सानिध्य में रहने का मौका मिलता है तब हमें एक नई ऊर्जा प्राप्त होती है। गुरु ज्ञान की ज्योति, ध्यान की मूर्ति और आराधना साधना के सच्चे प्रेरक है।

पू. मुनि नयज्ञसागरजी म. ने गुरु-महिमा बताते हुए कहा- जीवन में गुरु के प्रति समर्पण होना चाहिए। वे ही हमें परमात्मा का मार्ग दिखाकर सही राह पर चलाते है। उनकी कृपा से पामर भी परमात्मा बन सकता है। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर सैकड़ों भक्तों का आना हुआ। सभी ने गुरुपूजन का लाभ लिया। एवं दोपहर में दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा का आयोजन हुआ। जिसमे सभी ने भावों से मधुर सुंदर गीत गाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

चौहटन में चातुर्मास प्रवेश

चौहटन 6 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्या सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्या साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. की आदि ठाणा-7 का चौहटन में दि. 6 जुलाई को चातुर्मासिक नगर प्रवेश हुआ।

प्रात: 9 बजे द्वारकादास डोसी पेट्रोल पंप से गाजे-बाजे के साथ प्रारंभ हुई प्रवेश शोभायात्रा में बैंड, ढोल, सिर पर मंगल कलश धारण किए हुए महिला मंडल एवं बालिका मंडल, जैन ध्वज लिए पाठशाला के बच्चे, पुरुष वर्ग एवं महिलाएं शामिल थी। नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए शांतिनाथ जिनालय प्रांगण में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुई।

जैन श्री संघ के अध्यक्ष द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर एवं बालिका मंडल द्वारा स्वागत गीत से गुरुवर्या का अभिनंदन एवं स्वागत किया गया। अध्यक्ष हीरालाल धारीवाल ने अपने भाव व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में चौहटन सरपंच श्रीमती कंचन कवर, चौहटन एसडीएम भागीरथराम चौधरी, जिला परिषद सदस्य रूपसिंह राठौड़, विकास अधिकारी छोटूसिंह काजला, चौहटन थानाधिकारी भुटाराम विश्नोई और बाहर से पधारे हुए सभी संघों के पदाधिकारियों और मेहमानों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष रतनलाल सेठिया ने भी अपना उद्‌बोधन दिया। खरतरगच्छ महिला परिषद, वीतराग संस्कार वाटिका द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। वंशराज भंसाली, माणकचन्द चौपड़ा, कैलाश सेठिया, रतनलाल छाजेड़ (सूरत), पवन धारीवाल, अशोक बोहरा, कपिल बोथरा सांचौर, अरविंद धारीवाल, प्रेमलता ललवानी आदि वक्ताओं ने उद्‌गार व्यक्त किए।

पूज्या कल्पलताश्रीजी ने प्रवचन में कहा- चातुर्मास हमारे लिए महत्वपूर्ण है, हमें इस चातुर्मास में जिनवाणी को श्रवण कर अपने जीवन में परिवर्तन लाना है। साध्वी शीलांजनाश्रीजी ने अपने प्रवचन में नियमित चातुर्मासिक प्रवचनमाला में उपस्थित रहकर एवं धर्म-आराधना कर अपने आत्मकल्याण की राह प्रशस्त करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के समापन पर गौतम भंसाली ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रेषक-कपिल मालू, हंसराज सिंघवी मीडीया प्रभारी

बसवनगुड़ी दादावाड़ी में भव्य चातुर्मास प्रवेश सम्पन्न

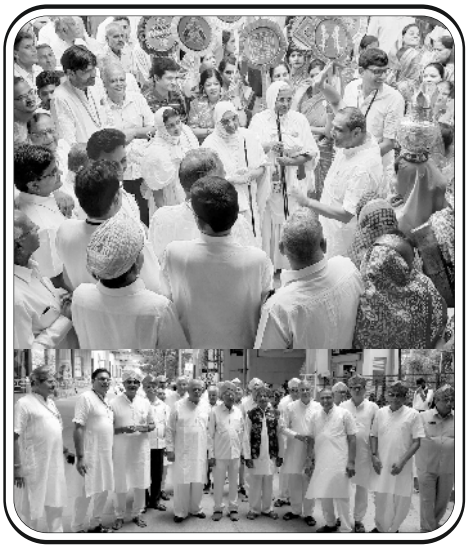

बेंगलुरु 4 जुलाई। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुड़ी के तत्त्वावधान में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की आज्ञानुवर्तिनी पूज्या साध्वी श्री निपुणाश्रीजी महाराज साहब की सुशिष्या साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास प्रवेश बसवनगुड़ी दादावाड़ी में संपन्न हुआ। ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष निर्भयलालजी गुलेच्छा ने पधारे हुए सभी धर्मप्रेमी बंधुओं का स्वागत किया।

प्रात: शुभ वेला में संभवनाथ जैन मंदिर से विशाल शोभायात्रा का आरंभ हुआ, जिसमें बेंगलुरु के अनेक मंडलों ने सहभागिता प्रदान की। अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद के बैण्ड और उमंग बैंड ने बहुत ही सुंदर और सुमधुर धुनों से संगीतमय बनाया, इस अवसर पर बाहर गांव से भी अनेक सदस्य पधारे, श्री जिनकुशलसूरि जैन महिला संगीत मंडल के सदस्य श्रीमती मीना भन्साली, ललिताजी पालरेचा, जूली भण्डारी ने और श्री जिनकुशलसूरि जैन सेवा एवं संगीत मंडल के राजेन्द्र गुलेच्छा तथा दिनेश विकास प्रेक्षा कोचर ने स्वागत गीत और कविता प्रस्तुत की।

साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी ने चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर अपने प्रवचन में चातुर्मास के महत्व को बताते हुए कहा कि चातुर्मास में सभी भौतिक सुख-सुविधाओं का त्याग कर संयमित जीवन बिताया जाता है।

ट्रस्ट के प्रवक्ता अरविन्द कोठारी ने कहा कि चातुर्मास में स्वाध्याय, जप-तप मांगलिक प्रवचनों का लाभ तथा साधु-संतों की सेवा में संलिप्त रहकर जीवन सफल करने की मंगलकामना कर सकते हैं। आरतीजी जैन और वन्दनाजी चौपडा ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। प्रवेश में परमात्मा की सुनहरी पालकी सभी के आकर्षण का केन्द्र रही।

कार्यक्रम की शुरुआत में श्रीमती नैनीबाई मुलतानमलजी दांतेवाडिया परिवार ने गुरुवर्याश्रीजी को संघ की ओर से उपाश्रय में बधाने का लाभ, गिरधारीलालजी बाबूलालजी मेहता परिवार ने परमात्मा के और गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण, लालचन्दजी शांतिबाई गोठी परिवार ने दीप प्रज्ज्वलन, शांतिदेवी पुखराजजी गुलेच्छा परिवार द्वारा गुरुवर्या को काम्बली ओढ़ाई गई एवं शांतिदेवी चुन्नीलालजी गुलेच्छा परिवार द्वारा गुरुवर्या का गुरुपूजन किया गया। प्रवेश की व्यवस्था और संचालन श्री जिनदत्त कुशलसूरि जैन सेवा मंडल द्वारा तथा स्वामीवात्सल्य की व्यवस्था सेवा मंडल के साथ अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् ने निभाई। -ललित डाकलिया

सुवर्ण दीक्षा वर्ष प्रवेश निमित्त अक्कलकुवा में कार्यक्रम संपन्न

पू. अवन्ती तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 50वें दीक्षा प्रवेश वर्ष प्रवेश पर अक्कलकुवा में भी अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद व महिला परिषद की ओर से सुबह सामूहिक सामायिक एवं सरकारी दवाखाना में अल्प आहार वितरण किया गया। जिसमें अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के खान्देश प्रदेशाध्यक्ष तथा अक्कलकुवा शाखा अध्यक्ष मनोज डागा, राष्ट्रीय प्रचार प्रसार मंत्री तथा शाखा सचिव शुभम भंसाली, उपाध्यक्ष अनिल गुलेच्छा, दिनेश कोचर, कोषाध्यक्ष दिलीप कोचर, अनिल चोपडा, प्रचार प्रसार मंत्री कुशल गुलेच्छा, संयम गुलेच्छा साथ ही महिला परिषद के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

पाली में चातुर्मास प्रवेश संपन्न

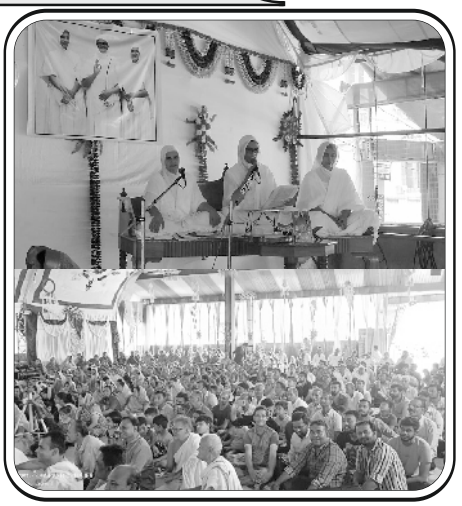

पाली 6 जुलाई। श्री जिनकुशल जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ के तत्त्वावधान में सुबह 7:30 बजे विवेकानंद सर्किल स्थित समुद्र विहार से वसीमालाणी रत्नशिरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक पू. आचार्य श्री जिनमनोज्ञसागरसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में गच्छगणिनी पू. श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. की शिष्या मधुरभाषी पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री प्रियशुभांजनाश्रीजी म. का चातुर्मास का प्रवेश हुआ।

प्रवेश में छोटे बच्चों की मधुर बेंड ने सबका मन मोह दिया। संघ की महिलाएं सिर पर मंगल कलश लेकर चल रही थी। प्रवेश पुराना बस स्टेंड से होता हुआ महावीर नगर स्थित सुधर्मास्वामी प्रवचन मण्डप पहुँचा। वहाँ मण्डप पर गुरुदेव के पधारने पर सामेला के लाभार्थी बाबूलालजी सम्पतराजजी संखलेचा सुपुत्र स्व. ताराचंदजी संखलेचा की महिलाओं द्वारा सामेला किया गया। मण्डप के लाभार्थी जगदीशचंद रतनलाल बोथरा द्वारा उद्घाटन किया गया।

मण्डप में सर्व प्रथम बालिकाओं द्वारा नवकार मंत्र की मंगल प्रार्थना के नृत्य से आरंभ किया गया उसके पश्चात कुशल विचक्षण महिला मंडल द्वारा मंगल पाठ का गायन किया गया। संघ के संरक्षक श्री जगदीशचंद्र छाजेड़, संघ के अध्यक्ष जगदीशचंद्र भंसाली, संयोजक जगदीश बोथरा, सचिव संपत संकलेचा आदि ने उद्बोधन दिया।

पू. खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने प्रवचन में बताया हर व्यक्ति को गुरु की वाणी पर अपनी धर्म यात्रा निरन्तर जारी रखनी चाहिये। इस संसार में गुरु ही सच्चे नि:स्वार्थ भाव से भक्तों को सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र के साथ आध्यात्मिक जीवन यात्रा कराते हैं।

पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. ने कहा कि चातुर्मास हमारे शासन का अनमोल पर्व है। सभी जुडेंगें तभी चातुर्मास सार्थक होगा। पू. साध्वी अतुलप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी शुभांजनाश्रीजी ने चातुर्मास में धर्म के लिए पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर जोधपुर, डुठारिया, बाड़मेर, हैदराबाद, तिरुपति बालाजी, सूरत, अहमदाबाद, बालोतरा आदि स्थानों से गुरुभक्त पधारे। स्थानीय सभी संघ के गणमान्य श्रावक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। विधायक ज्ञानचंदजी पारख, महेन्द्रजी बोहरा, नरेश मेहता आदि मौजूद थे। अंत में सधार्मिक भक्ति का आयोजन भगवानदासजी कनककुमारजी प्रवीणकुमारजी विपिनकुमारजी छाजेड परिवार की ओर से किया गया।

दि. 24/07 को सीमंधर स्वामी की भावयात्रा हुई। मुख्य लाभार्थी मातुश्री गजीदेवी, सोहनलाल, अनिल, राजेंद्र, सुमित सेठिया परिवार द्वारा सुबह चहुंमुखी भगवान सीमंधर स्वामी की प्रतिमा सहित संघ निकाला गया। भावयात्रा में श्रावक श्राविकाओं के आँखों पर पट्टी बांधी गई। महाविदेह क्षेत्र में सदेह विचरण कर रहे है सीमंधर स्वामी। हम भी ऐसी आराधना करे कि हमारा जन्म महाविदेह में हो क्योंकि वहाँ से आज भी मोक्ष में जा सकते हैं।

दि. 31/07 को श्री जिनेश्वरसूरि के जीवन काल पर आधारित नाटक आयोजित किया गया। अपनी वाणी से प्रभावित करते हुए उन्हें अनेक को शास्त्रार्थ में पराजित किया। शास्त्रार्थ में खरे उतरे इसलिए खरतर की उपाधि प्राप्त की तभी से खरतरगच्छ नाम की प्रसिद्धि हुई।

दि. 02/08 को बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक के दिन आओ नेमिनाथ प्रभु से बात करें प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। 22 दिवसीय सौभाग्य कल्पवृक्ष तप की आराधना चल रही है।

मुम्बई में हुआ ज्ञान-क्रिकेट का आयोजन

मुंबई 31 जुलाई। श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में कांतिमणि नगर, लोहाणा महाजनवाडी में पूज्या गुरुवर्या मारवाड़ ज्योति खानदेश ज्योति गच्छगणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा., स्नेह सुरभि खानदेश रत्ना पू. साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा में धार्मिक ज्ञान से भरपूर अद्‌भुत क्रिकेट प्रतियोगिता खरतरगच्छ प्रीमियर लीग का भव्य आयोजन हुआ। केयुप किंग, रोयल केएमपी, केबीपी नाइट राइडर्स, सांचोर सुपर किंग्स, पायधुनी पेंथर्स व भिवंडी ब्लास्टर्स इस प्रकार 6 टीम ने भाग लिया। सभी ने बहुत ही शानदार प्रश्नोत्तर खेल का प्रदर्शन किया।

अंतिम फाइनल में केयूप किंग्स और पायधुनी पेंथर्स टीम का रोमांचक मुकाबला हुआ जिसमें पायधुनी पेंथर्स टीम विजेता हुई। विजेता टीम को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। रनर्स अप एवं अन्य सभी टीम को ट्रोफी एवं पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संपूर्ण प्रतियोगिता का सुंदर संचालन फलौदी से पधारे श्रीमती रुपलताजी ने किया। चंपालालजी वाघेला ने अपनी भाववाही कोमेंट्री से सभी का मन मोह लिया।

इस अवसर पर पूर्व नगरसेवक व मरीन लाइंस जूनियर चेंबर के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जीवराजजी मेहता, एम एल जे सी चेरीटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बाबुलालजी गांधी एवं विख्यात भवन निर्माता एवं समाजसेवी श्री नरेशजी मेहता विशेष अतिथि के रुप में पधारकर कार्यक्रम को शोभायमान किया। क्रिकेट मैच के बाद स्वामीवात्सल्य का आयोजन हुआ। स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी सांचोर निवासी श्रीमान प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा का तिलक माला एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

-धनपत कानुंगो मुंबई

खापर में जिनालय की ५५वीं ध्वजा

खापर 00 जुलाई। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की आज्ञानुवर्तिनी पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका गच्छगणिनी पू. श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में खापर में श्री नमिनाथ जैन मंदिर की 55वीं ध्वजा निमित्त त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रथम दिवस अठारह अभिषेक एवं प्रभु भक्ति का आयोजन किया गया एवं जैन श्रीसंघ खापर द्वारा स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। दूसरे दिन श्री रिद्धि-सिद्धि दायक विघ्न विनाशक श्री दादा गुरुदेव महापूजन का आयोजन किया गया जिसमें 108 जोडों ने पुजन का लाभ लिया। महापूजन के लाभार्थी श्रीमती रुपाबाई स्व. गुलाबचंदजी चोरडिया परिवार ने विशेष लाभ लिया। साथ ही स्वामीवात्सल्य का लाभ स्व.बसंतीबाई चैनसुखजी बोथरा की स्मृति में श्री सुरेशचंदजी विनय, पवन, डॉ. स्वप्निल बोथरा ने लिया। रात में प्रभु भक्ति में बाडमेर के संगीतकार गौरव मालू ने भक्ति में रंग जमाया।

तृतीय दिन सुबह सत्तर भेदी पूजा कर विजय मुहूर्त्त में श्री सुरेशचंदजी चैनसुखजी बोथरा परिवार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। महोत्सव में अक्कलकुवा, सेलम्बा, वान्याविहिर श्रीसंघ के सदस्य भी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं महिला परिषद के सभी पदाधिकारियों ने विशेष भूमिका निभाई।

-शुभम गौतमचंदजी भंसाली अक्कलकुवा

परमात्मा नेमिनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया

बेंगलुरु 2 अगस्त। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुड़ी बेंगलुरु में 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक महोत्सव पूज्या साध्वी मंजुलाश्रीजी म. की निश्रा में धूमधाम से मनाया गया। श्री जिनकुशलसूरि जैन धार्मिक पाठशाला के अभ्यासकों द्वारा स्नात्र पूजा का आयोजन किया गया। दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा, महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा, खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष बाबूलाल भंसाली, महामंत्री अरविन्द कोठारी ने सकल श्रीसंघ को परमात्मा के जन्म कल्याणक की बधाई दी।

इस अवसर पर साध्वीजी ने फरमाया कि परमात्मा का जन्म कल्याणक मनाना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। परमात्मा के कल्याणक बहुत ही अहोभाव पूर्वक मनाने से हमारे पुण्य का अर्जन और पापों का नाश होता है।

जन्म कल्याणक के अवसर पर दिनेश, विकास और प्रेक्षा कोचर ने परमात्मा के कल्याणक निमित्त विशेष भक्ति गीतों की प्रस्तुति पर पाठशाला के बच्चों ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किए। दादावाड़ी ट्रस्ट एवं सकल संघ की ओर से सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। –ललित डाकलिया

खरतरगच्छ महिला परिषद की बैठक संपन्न

बेंगलुरु 00 जुलाई। अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद बेंगलुरु शाखा की नव युवतियों के ग्रुप की बैठक बसवानगुड़ी स्थित श्री विमलनाथ जिनालय एवं दादावाड़ी में संपन्न हुई। नव युवतियों को गच्छ की समाचारी, परमात्मा की स्नात्र पूजा, प्रतिक्रमण की गाथाएं एवं धार्मिक ज्ञान प्रदान करने हेतु यह बैठक रखी गई। बैठक में महिला परिषद अध्यक्षा श्रीमती रीटा पारख, महामंत्री श्रीमती आरती जैन के साथ अनेक सदस्य जिनमें मुख्यतया नवविवाहित नवयुवतियां थी, महिला परिषद् द्वारा आगे भी इसी तरह के ज्ञानवर्धक कार्यक्रम जारी रहेंगे। इसके साथ महिला परिषद् की ओर से पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के सुवर्ण संयम वर्ष के उपलक्ष्य में सामूहिक आयम्बिल सप्ताह आयोजित किया गया, जिसमें अनेक सदस्याओं ने आयम्बिल करके गच्छाधिपतिजी को संयम वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित की। सभी को गाथाएं सिखाने में पवनी बाफना एवं आरती जैन का सहयोग रहा तथा मैनेजमेंट हेतु रेखा चोपड़ा का सहयोग प्राप्त हुआ। बैठक के अन्त में श्रीमती रीटा पारख ने पधारे हुए समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

कोठी श्री संघ में विविध समारोह

हैदराबाद 25 जुलाई। कोठी अजितनाथ जैन संघ में पूनिया श्रावक की सामायिक का आयोजन किया गया। सामायिक का महत्व बताते हुए नाटिका मंचित की गयी। इससे पूर्व राजगृही नगरी का उद्घाटन जैन रत्न सुरेंद्र लूणिया सिद्धांत लूणिया परिवार द्वारा किया गया। गांधी ज्ञान मंदिर, कोठी में विराजित पूज्या साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी योगांजनाश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी संवेगप्रियाश्रीजी म.सा. के साथ सकल श्री संघ ने राजगृही नगरी में प्रवेश किया।

अंशुल कोठारी द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गयी। नाटिका में रुचिका, सोनल, दीपिका, वंशिका, रिशिका, पलक, धृति ने नृत्य प्रस्तुत किया। नाटिका में मगध देश के राजा श्रेणिक का अशोक बंदा मुथा व रानी चेलना का किरदार रेणु जैन ने निभाया। विविध पात्रों का मंचन संघ के बालक-बालिकाओं ने निभाया। श्रेणिक राजा की जीवनी पूज्या साध्वी योगांजनाश्री जी.सा. ने प्रस्तुत की। नाटिका में अजित पार्श्व युवा संगठन व अजित पार्श्व जूनियर संगठन का सहयोग रहा।

इससे पूर्व में जिनशासन महान् का आयोजन किया, जिसमें शासन की अनेक घटनाओं का वर्णन किया गया।

कुशल वाटिका में शक्रस्तव अभिषेक

बाडमेर 2 अगस्त। परमात्मा नेमिनाथ के जन्म कल्याणक के उपलक्ष में पूज्य तपस्वी श्री तीर्थरत्नसागरजी म., पू. मुनि श्री प्रशमसागरजी म. एवं पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. आदि साध्वी वृंद की निश्रा में वर्धमान शक्रस्तव से परमात्मा का भक्तिमय वातावरण में अभिषेक संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ श्री द्वारकादास भगवानदासजी डोसी के वासक्षेप अर्पण से हुआ। क्षेत्रपाल की स्थापना एवं प्रथम अभिषेक श्री रतनलालजी केसरीमलजी संकलेचा ने किया। द्वितीय अभिषेक एवं पुष्प वर्षा श्री अनिलकुमार बाबूलालजी मेहता ने की। आरती का लाभ स्व. टीपूदेवी भूरमलजी बोथरा ने लिया। मंगल दीपक सतीशकुमारजी मेवारामजी छाजेड़ ने किया। शांति कलश का लाभ श्री मांगीलालजी त्रिलोकचंदजी देशलरा नारायणपुरा वालों ने लिया। कार्यक्रम में बाड़मेर से भारी संख्या में लोगों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम के बाद प्रसादी का लाभ चातुर्मास के लाभार्थी परिवार द्वारा लिया गया। इस कार्यक्रम का संचालन आशीषभाई शाह शंखेश्वर ने किया। केयुप द्वारा कार्यक्रम की सुंदर व्यवस्था की गई। इस महाभिषेक कार्यक्रम को सभी लोगों द्वारा सराहा गया।

–प्रेषक कपिल मालू

नीमच में खरतरगच्छ दिवस का आयोजन

नीमच 3 अगस्त। श्री महावीर जिनालय आराधना भवन विकास नगर नीमच में दिनांक 3 अगस्त को खरतरगच्छ दिवस के अवसर पर एवं तपस्वी मुनिराज श्री छगनसागर जी म. सा. की पुण्य तिथि पर पूज्या साध्वी प्रगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 की निश्रा में गुणानुवाद सभा एवं दादागुरु इकतीसा के सामुहिक जाप का आयोजन अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद एवं खरतरगच्छ महिला परिषद शाखा नीमच द्वारा श्री संघ की उपस्थिति में किया गया।

इस अवसर पर पूज्य साध्वी प्रगुणाश्रीजी म. द्वारा खरतरगच्छ दिवस पर एवं तपस्वी मुनिराजश्री पर अपना सारगर्भित उद्‌बोधन दिया। गुणानुवाद सभा में खरतरगच्छ संघ के वरिष्ठ व महावीर जिनालय ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष प्रेमप्रकाशजी पगारिया एवं खरतरगच्छ युवा परिषद नीमच के सदस्य मालव दर्शन के संपादक राहुल पगारिया एवं महावीर जिनालय ट्रस्ट के उपाध्यक्ष राजमलजी छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्रजी बंबोरिया द्वारा किया गया।

इस अवसर पर महावीर जिनालय ट्रस्ट के अध्यक्ष राकेशजी आंचलिया, श्री आदिनाथ जिनालय एवं जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष सुनीलजी गोपावत, चंदूजी छाजेड़, चंद्रराजजी कोठीफोड़ा आदि श्री संघ के सदस्य एवं महिला परिषद की सदस्याएं उपस्थित थी।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर दुकान पर था। ठीक उसने सामने घटाशंकर की दुकान थी। उसने कुछ दिनों पहले ही अपनी दुकान का उद्घाटन किया था।

उसने देखा- घटाशंकर अपनी दुकान के आगे एक बोर्ड लगा रहा था।

उस बोर्ड पर बडे-बडे अक्षरों में लिखा था- शुद्ध देशी घी- 300 रु. किलो।

जटाशंकर ने दो मिनट विचार किया। उसके बाद उसने भी अपनी दुकान के आगे एक बोर्ड लगा दिया। उस बोर्ड पर लिखा था- शुद्ध देशी घी- 250 रु. किलो।

यह देख घटाशंकर सोच में पड गया। वह विचार करने लगा- यदि सामने वाला 250 रु. में घी बेचेगा तो मेरी दुकान से कौन खरीदेगा! उसने सोचा- मुझे भी भाव कम करने होंगे।

उसने वह बोर्ड हटा कर नया बोर्ड लगाया। उस पर लिखा- शुद्ध देशी घी- 230 रु. किलो।

यह देख जटाशंकर ने भी अपना बोर्ड बदल दिया। उसने 200 रु. किलो का बोर्ड लटका दिया।

घटाशंकर बहुत परेशान हो गया। वह सोचने लगा- यह आदमी इतना सस्ता घी कैसे बेच सकता है! यदि मैं 250 रु. में बेचता हूँ तब भी नुकसान में रहता हूँ। और यह 200 रु. में बेच रहा है।

उसने सोचा- इस आदमी से दोस्ती बनाकर बात करता हूँ। यह इतना सस्ता घी लाता कहाँ से है!

वह दूसरे ही दिन जटाशंकर के पास गया और बोला- भाई साहब! आपने 200 रु. किलो शुद्ध घी बेचने का बोर्ड लगाया है। इतना सस्ता घी आप कैसे बेचते हैं?

जटाशंकर मूंछों में मुस्कुराया और कहा- मेरी दुकान में तो घी है ही नहीं।

घटाशंकर बोला- फिर बोर्ड?

- वह तो यों ही लगा दिया है।

घटाशंकर ने अपना माथा पीट लिया। इसके बोर्ड के चक्कर में आकर मैंने कितना सारा घी नुकसान में बेच दिया।

पास है नहीं और बेचने चले हैं। उन्हें केवल बातें करनी है या बोर्ड लगाना है। उन्हें केवल दूसरों को भ्रमित करना है। यही बात ज्ञान, ध्यान आदि हर क्षेत्र में लागू होती है। वही अधिकारी है, जो स्वयं आचरण करता हो।

सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की साधना

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. सूरिमंत्र पीठिका साधना के दूसरे चक्र में तीसरी पीठिका की साधना आसोज वदि 12 बुधवार ता. 22 सितम्बर 2022 से प्रारंभ करेंगे। 25 दिवसीय इस साधना की पूर्णाहुति कार्तिक वदि दूसरी छठ रविवार ता. 16 अक्टूबर 2022 को संपन्न होगी। उसी दिन महापूजन के साथ महामांगलिक का आयोजन होगा।

डुठारिया में आचार्यश्री का चातुर्मास प्रवेश

तिरपातुर में गणिवर्य श्री का चातुर्मास प्रवेश

मुम्बई में चातुर्मास प्रवेश

चौहटन में चातुर्मास प्रवेश

सादर श्रद्धांजलि

रहे सदा जीवनभर जग में, तुम मेरी पहचान पिता।
कहाँ चुका पाती जीवनभर, इस ऋण को संतान पिता।।
अपनी आंखों के तारों का, आसमान थे सचमुच तुम।
सौ जन्मों तक नहीं चुकेगा, हमसे यह एहसान पिता ।।

आदरणीय श्री तेजराजजी धूड़चंदजी कांकरिया

गढ़ सिवाणा-हुबली

स्वर्गवास 2 अगस्त 2022

विनयावनत

तीजोदेवी

महावीर, हितेश, प्रदीप कांकरिया परिवार, सिवाणा-हुबली

सौ. रेखादेवी-महेन्द्रजी जीरावला, नंदुरबार

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

जयपुर में केयुप जयपुर द्वारा आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फैक्स : 02973-256040, फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए. जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408